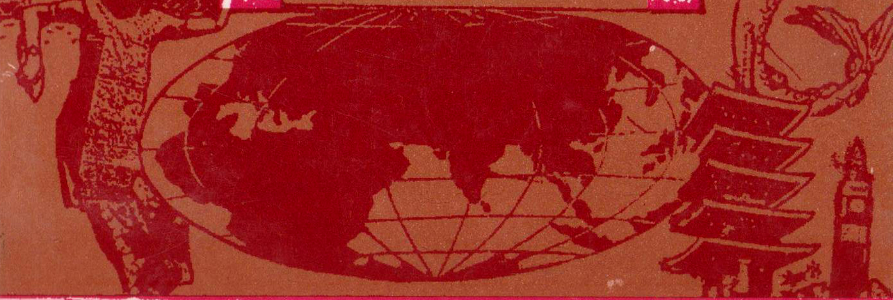
इल्या की बहादुरी

देश-देश की लोककथाएं





रूस





इल्या की बहादुरी

रूस की रोचक और
मनोरंजक लोक कथाएं

सम्पादक
यशपाल जैन

२००२

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ISBN 81-7309-048-5

प्रकाशक
मंत्री
सस्ता साहित्य मण्डल
एन–७७, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली–११०००१
फोन : ३३१०५०५
शाखा : १२६, जीरो रोड, इलाहाबाद
फोन : ०५३२–४०००३४

●

दूसरी बार	२००२
प्रतियां	१०००
मूल्य	रु. २५.००

●

मुद्रक
वंदना इंटरप्राइजिज, दिल्ली–११००६२

प्रकाशकीय

'सस्ता साहित्य मण्डल' से हमने हिन्दी तथा उसके परिवार की अन्य भाषाओं की चुनी हुई लोक–कथाओं की लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इन पुस्तकों की पाठकों ने भूरि–भूरि प्रशंसा की है। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि उस माला की प्रायः सभी पुस्तकों के एकाधिक संस्करण हो गये हैं।

उसी से प्रेरित होकर हमने प्रस्तुत नई पुस्तक–माला आरम्भ की है। इसमें विभिन्न देशों की चुनी हुई लोक–कथाओं को प्रकाशित किया जा रहा है।

पाठक देखेंगे कि लोक–कथाओं में कितना साम्य होता है। यदि कहानियों के परिवेश तथा पात्रों के नामों में अंतर न हो, तो पता ही नहीं चलता कि कौन कथा किस देश की है।

इस माला की पहली पुस्तक **मारीशस की शकुन्तला** में मारीशस की लोक–कथाएं दी गई हैं। इस दूसरी पुस्तक में रूस की। आगे बर्मा, चीन, इण्डोनेशिया, थाइलैण्ड, कनाडा आदि देशों की लोक–कथाओं की पुस्तकें प्रकाशित होंगी।

आशा है, ये कथाएं एक देश की संस्कृति, कला और संवेदना को दूसरे देश की संस्कृति, कला और संवेदना से जोड़ने में सहायक होंगी।

–मंत्री

इल्या
की
बहादुरी



१/ वह नन्ही लड़की

दो भाई यात्रा पर निकले। उनमें से एक भाई ग़रीब था, दूसरा भाई अमीर था। दोनों के पास एक-एक सवारी थी। ग़रीबभाई की गाड़ी में जुती थी घोड़ी और अमीर भाई की गाड़ी में जुता था

घोड़ा । चलते–चलते रात हो गयी, तो वे एक जगह आराम करने को रुक गये ।

रात को ग़रीब भाई की घोड़ी ने बच्चा दिया । बच्चा लुढ़ककर अमीर भाई की गाड़ी के नीचे आ गया । सुबह अमीर भाई ने यह देखा तो अपने ग़रीब भाई को जगाकर कहा, "उठ, भैया, देख, रात को मेरी गाड़ी ने एक बच्चा पैदा किया है ।"

ग़रीब भाई ने उठकर कहा, "गाड़ी कैसे बच्चा जन सकती है ? यह तो मेरी घोड़ी ने पैदा किया है !"

अमीर भाई बोला, "तुम्हारी घोड़ी ने पैदा किया होता, तो बच्चा उसके पास पड़ा होता ।"

दोनों भाइयों में झगड़ा हो गया और वे अदालत की शरण में गये । वहां पैसेवाले भाई ने हाकिम को रिश्वत देकर अपनी तरफ़ कर लिया । ग़रीब भाई के पास हाकिम को रिश्वत देने के लिए कुछ भी नहीं था, उसके पास तो सिर्फ़ सचाई थी ।

आखिर में, मामला खुद ज़ार महाराज के सामने पहुंचा ।

ज़ार ने दोनों भाइयों को अपने दरबार में बुलवाकर उन्हें बूझने के लिए चार पहेलियां दीं :

"दुनिया में सबसे ताक़तवर और सबसे तेज़ चलनेवाली कौनसी चीज़ है ? सबसे मोटी चीज़ कौन–सी है ? सबसे कोमल कौन है ? सबसे प्यारी चीज़ क्या है ?"

ज़ार ने उन्हें सोचने के लिए तीन दिन दिए । बोला, "चौथे रोज़ आकर मुझे जवाब सुनाना ।"

पैसेवाला भाई कुछ देर तक सोचता रहा । तभी उसे अपनी बुढ़िया दोस्त की याद आयी और वह सलाह लेने के लिए उसके पास गया । उसने बड़ी आवभगत के साथ उसे बैठाया और फिर पूछा, "क्यों इतने उदास दिखाई देते हो ?" "क्या बताऊं ? ज़ार ने मुझे चार पहेलियां बूझने को दी हैं और समय दिया है सिर्फ तीन दिन का ।"

"तो मुझे बताओ, कौन–सी पहेलियां हैं ?"

"अच्छा, सुनो ! पहली पहेली है–दुनिया में सबसे ताक़तवर और सबसे तेज़ चलनेवाली चीज़ कौन–सी है ?"

"अरे, यह भी कोई पहेली है ! मेरे पति की भूरी घोड़ी । उससे तेज़ और कौन चल सकता है ? जरा चाबुक से छू दो, वह ख़रगोश से आगे निकल जायेगी ।"

"दूसरी पहेली सुनो–दुनिया में सबसे मोटी चीज़ कौन–सी है ?"

"अरे, वह सूअर, जिसे हम दो साल से पाल रहे हैं । वह अभी से इतना मोटा हो गया है कि अपने पैरों के बल खड़ा भी नहीं हो सकता ।"

"तीसरी पहेली सुनो–दुनिया में सबसे कोमल चीज़ क्या है ?"

"परों का बिछौना । ज़ाहिर है , उससे अधिक कोमल और किस चीज़ की कल्पना की जा सकती है ?"

"अच्छा, अब यह आख़िरी पहेली भी सुन लो–सारी दुनिया में सबसे प्यारी कौन–सी चीज़ है ?"

"मेरा पोता, इवानुश्का । वही है सबसे प्यारा ।"

"भगवान तुम्हारा भला करे ! मैं आजीवन तुम्हारा आभारी रहूंगा । तुमने मुझ कम अक़्ल वाले को अक़्ल दी है ।"

उधर ग़रीब भाई फूट–फूटकर रोता हुआ अपने घर पहुंचा । दरवाज़े पर ही उसकी सात साल की बिटिया उससे मिली । उसके परिवार में बस यही एक लड़की थी । बोली, "पिताजी, आप रो क्यों रहे हैं ? इतनी लम्बी–लम्बी आहें क्यों भर रहे हैं ?"

"क्या करूं, बेटी ! ज़ार ने मुझे चार पहेलियां बूझने को दी हैं । मैं ज़िन्दगी भर उनको बूझ नहीं पाऊंगा ।"

"मुझे बताओ, वे कौन–सी पहेलियां हैं ?"

"तो सुनो, बेटी ! दुनिया में सबसे ताक़तवर और सबसे तेज़ चलनेवाली चीज़ कौन–सी है, सबसे मोटी चीज़ कौन–सी है, सबसे कोमल क्या है और सबसे प्यारी चीज़ कौन–सी है ?"

"पिताजी, आप ज़ार के पास जाइये और उससे कहिये कि सब चीज़ों से ज़्यादा ताक़तवर और तेज़ हवा है; सबसे मोटी चीज़ धरती है, क्योंकि दुनिया की तमाम जानदार चीज़ों का वही पालन–पोषण करती है ; सबसे कोमल अपना हाथ है ; क्योंकि आदमी नरम–से–नरम बिस्तर पर लेट जाये, फिर भी वह अपना हाथ ही अपने सिर के नीचे रखता है और दुनिया में सबसे प्यारी चीज़ नींद है ।"

फिर अमीर और ग़रीब दोनों भाई ज़ार के सामने हाज़िर हुए । ज़ार ने उनके जवाब सुनकर ग़रीब भाई से पूछा, "तुमने पहेलियां खुद बूझी हैं या किसी से मदद ली है ?"

"जहांपनाह, मेरी एक बिटिया है सात बरस की । उसी ने मुझे पहेलियों के जवाब बताये हैं ।"

"अगर तुम्हारी बेटी इतनी बुद्धिमती है तो लो, रेशम का यह धागा उसके

पास ले जाओ और उससे कहो कि कल सुबह तक इस धागे से मेरे लिए एक कामदार तौलिया बुन दे ।"

ग़रीब भाई ने रेशम का वह ज़रा-सा धागा ले लिया और जब वह घर पहुंचा तो फिर से उसके चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी । वह चिन्ता और शोक के सागर में डूबा हुआ था ।

"हमारा तो भाग्य ही फूट गया है, बेटी," उसने कहा । "ज़ार ने हुक्म दिया है कि तुम रेशम के इस ज़रा-से धागे से उसके लिए एक कामदार तौलिया बुनकर दो ।"

"पिताजी, आप चिन्ता न कीजिये," बेटी ने जवाब दिया ।

उसने झाड़ू से एक सींक निकालकर अपने बाप को दी और बोली, "इस सींक को ज़ार के पास ले जाइये और उससे कहिये कि पहले कोई ऐसा कारीगर ढुंढ़वाये जो इस सींक से करघा बना दे । मैं उस करघे पर ही ज़ार के लिए तौलिया बुनूंगी ।"

उसका बाप ज़ार के पास गया और उसने ज़ार को बताया कि उसकी लड़की क्या चाहती है । इसके बाद ज़ार ने उसे डेढ़ सौ अण्डे दिये और कहा, "ये अण्डे अपनी बेटी को देना और उससे कहना कि कल सुबह तक इन डेढ़ सौ अण्डों से चूज़े तैयार कर दे ।"

ग़रीब आदमी घर लौटा तो पहले रोज़ से भी ज़्यादा दुखी और निराश नज़र आता था । "अब क्या होगा, बेटी ? एक मुसीबत टलती है तो दूसरी झट से आकर खड़ी हो जाती है ।" इतना कहकर उसने अपनी लड़की को ज़ार का नया आदेश सुना दिया ।

"दुखी मत होइये, पिताजी," बेटी ने कहा ।

लड़की ने सारे अण्डे पकाकर दोनों समय के खाने के लिए रख दिये। इसके बाद उसने फिर बाप को ज़ार के पास जाने को कहा और बोली, "ज़ार से कहना कि चूज़ों के लिए एक ही दिन में उगाकर तैयार किया गया दाना चाहिए। सो खेत जोतकर उसमें दाना बोना होगा, उसे काटकर गाहना होगा और यह सारा काम एक दिन के अन्दर पूरा हो जाना चाहिए, वर्ना चूज़े उसे छुएंगे भी नहीं।"

ज़ार ने ग़रीब भाई की बात सुनकर उससे कहा, "अगर तुम्हारी लड़की इतनी बुद्धिमती है तो उससे कहना कि कल सुबह को वह खुद यहां आये, मगर इस बात का ध्यान रखे कि वह न तो नंगी हो और न कपड़े पहने हो, न पैदल हो, न घोड़े पर सवार हो, न कोई भेंट लेकर आये और न बिना भेंट के आये।"

ग़रीब आदमी ने सोचा, "बस, अब मारे गये! यह काम तो मेरी बेटी भी नहीं कर पायेगी।"

लेकिन उसकी बेटी ने कहा, "दुखी न होइये, पिताजी। ज़रा शिकारियों के पास जाकर उनसे मेरे लिए एक ज़िन्दा ख़रगोश और एक ज़िन्दा तीतर ख़रीद लाइये।"

बाप गया और एक ख़रगोश और एक तीतर ख़रीद लाया।

अगले दिन बड़े तड़के लड़की ने अपने सारे कपड़े उतार दिये, मछली पकड़ने का जाल ओढ़ा, तीतर हाथ में लिया और ख़रगोश की पीठ पर सवार होकर ज़ार के महल की ओर चल दी।

ज़ार उसे महल के फाटक पर मिला। लड़की ने उसे झुककर सलाम किया और फिर बोली, "महाराज, मैं आपके लिए यह भेंट लायी हूं।" इतना

कहकर उसने तीतर आगे को बढ़ाया । मगर ज़ार उसे लेना ही चाहता था कि वह फुर्र से उड़ गया ।

"बहुत ठीक," ज़ार ने कहा, "मैंने जैसा हुक्म दिया था, तुमने हू-ब-हू वैसा ही कर दिखाया । अब मुझे यह बताओ कि तुम्हारा बाप तो बहुत ग़रीब है, तुम लोग अपना पेट कैसे भरते हो ?"

"मेरा बाप सूखी ज़मीन पर मछलियां पकड़ता है । वह पानी में जाल नहीं बिछाता । मैं अपने पल्ले में भरकर मछलियां घर ले आती हूं ।"

"मूर्ख लड़की, सूखी ज़मीन पर मछलियां किसने देखी हैं ? वे तो पानी में तैरती रहती है ।"

"और आप तो बड़े बुद्धिमान हैं । आपने क्या कभी गाड़ी को घोड़े का बच्चा जनते देखा है ? गाड़ी नहीं, घोड़ी बच्चा जनती है ।"

फिर क्या था, ज़ार ने घोड़ी का बच्चा ग़रीब भाई को दिलवा दिया । ❑



२/ ईर्ष्या का फल

पुराने जमाने की बात है। एक-छोटे से गांव में दो किसान भाई रहते थे। एक ग़रीब था, दूसरा अमीर। अमीर गांव छोड़कर नगर में चला गया। वहां उसने अपने लिए एक बड़ी हवेली बनवायी और सौदागरी करने लगा। लेकिन ग़रीब भाई के पास कभी-कभी तो खाने के लिए रोटी का

एक टुकड़ा भी न होता और उसके छोटे–छोटे बच्चे भूख से बिलखते रहते । ग़रीब आदमी सारा दिन कड़ी मेहनत करता, मगर खून–पसीना एक करने पर भी उसे कुछ न मिलता ।

एक दिन उसने अपनी बीवी से कहा, "मेरे ख़्याल में मुझे नगर में जाकर अपने भाई से सहायता करने की प्रार्थना करनी चाहिए ।"

और वह अपने अमीर भाई के पास पहुंचा । भाई के पास जाकर उसने कहा, "प्यारे भाई, मुसीबत के समय मेरी मदद करो । मेरे पास बीवी–बच्चों को खिलाने के लिए रोटी तक नहीं है और वे कई–कई दिन तक भूखे पेट रहते हैं ।" भाई बोला, "एक सप्ताह तक मेरा काम करो और तब मैं कुछ मदद करूंगा !"

बेचारा ग़रीब भाई इसके सिवा और कर भी क्या सकता था ? उसने काम करना शुरू कर दिया । वह लकड़ी चीरता, पानी भरकर लाता, घोड़ों की देखभाल करता और आंगन में झाड़ू लगाता ।

हफ़्ता पूरा होने पर अमीर भाई ने उसे एक पावरोटी दी ।

"यह रही तुम्हारे काम की मज़दूरी ।" उसने कहा ।

"धन्यवाद, भाई, न होने से थोड़ा बेहतर है ।" ग़रीब भाई ने झुककर प्रणाम किया । वह चलने ही वाला था कि अमीर भाई ने उसे बुलाया, "ठहरो ! कल तुम मेरे मेहमान होना और अपनी बीवी को भी साथ लेते आना । तुम जानते हो, कल मेरा जन्मदिन है ।"

"ओ भाई, यह कैसे हो सकता है ! तुम तो खुद ही समझ सकते हो । तुम्हारे जन्मदिन के सिलसले में बड़े–बड़े व्यापारी, बढ़िया बूट और सुन्दर कोट पहनकर आयेंगे और मैं तो फटेहाल रहता हूं ।"

"इसकी कोई बात नहीं ! तुम आ जाना, तुम्हारे लिए भी जगह हो जायेगी ।" अमीर भाई ने कहा ।

"अच्छा, मैं आ जाऊंगा ।" ग़रीब ने जवाब दिया ।

ग़रीब किसान ने घर आकर बीवी को पावरोटी दी और कहा, "सुनती हो, कल हमें जन्मदिन के समारोह में शामिल होने की लिए बुलाया गया है ।"

"कैसा समारोह ? किसका जन्मदिन ?"

"मेरे भाई का जन्मदिन है और उसने हमें भी बुलाया है ।"

"अच्छा, तो चलेंगे ।"

अगली सुबह वे उठे और शहर की तरफ़ चल दिये । वे अमीर भाई के घर पहुंचे, उसे बधाई दी और एक बेंच पर बैठ गये । बहुत-से अमीर लोग पहले से ही मेज़ पर जमे थे और मेज़बान उन्हें अच्छी तरह खिला-पिला रहा था । मगर ग़रीब भाई और उसकी बीवी को उसने एक बार भी याद न किया । उन्हें खाने के लिए भी कुछ न दिया । वे दोनों एक तरफ बैठे-बैठे दूसरों को खाते-पीते देखते रहे ।

जब खाना ख़त्म हुआ तो मेहमान, मेज़बान और उसकी बीवी को धन्यवाद देकर जाने लगे । ग़रीब भाई भी उठा और उसने भी अपने भाई को झुक-कर प्रणाम किया ।

अमीर मेहमान, नशे में झूमते, शोर मचाते और गाते हुए घोड़ों पर सवार होकर खुशी-खुशी चले गये ।

उधर ग़रीब आदमी खाली पेट ही वापस चल दिया ।

"आओ, हम भी गाना शुरू करें ।" उसने अपनी बीवी से कहा ।

"पागल हो गये हो ! लोग इसलिए गा रहे हैं कि उन्होंने खूब डटकर खाया है और बहुत पी ली है । पर तुम्हें यह सनक क्यों सवार हो रही है ?" स्त्री ने कहा ।

"क्यों, क्या मैं अपने भाई का जन्मदिन नहीं मनाकर आया हूं ? बिना गाते हुए जाना मेरे लिए शर्म की बात है । अगर मैं गाऊंगा तो लोग यह समझेंगे कि दूसरों की भांति मुझे भी खिलाया–पिलाया गया है ।...." भाई बोला ।

"चाहो तो तुम गा सकते हो, मगर मैं नहीं गाऊंगी ।" स्त्री ने कहा ।

इस तरह किसान ने गाना शुरू कर दिया । परन्तु उसे ऐसा लगा कि वह दो आवाजें सुन रहा है । वह चुप हो गया ।

"सुनोजी," उसने बीवी से कहा, "क्या मेरी आवाज के साथ दूसरी पतली आवाज तुम्हारी थी ?"

"आज तुम्हें हुआ क्या है ? मैंने तो गाने की बात सोची तक भी नहीं ।" स्त्री बोली ।

"तब वह आवाज किसकी थी ?"

"मैं क्या जानूं ?" बीवी ने कहा । "फिर से गाओ, इस बार मैं सुनूंगी ।"

किसान ने फिर से गाना शुरू किया ।

उसे यह यक़ीन था कि वह अकेला गा रहा है, मगर फिर भी उसे दो ही आवाजें सुनाई दीं । तब उसने फिर एक बार रुककर पूछा, "मुसीबत, ओ मुसीबत ! क्या तुम मेरे साथ गा रही हो ?"

"हां, मालिक," मुसीबत ने उत्तर दिया "मैं हूं ।"

"तब ठीक है, हमारा साथ दो ।"

"अच्छा, मैं साथ दूंगी, मालिक ! और कभी साथ नहीं छोड़ूंगी ।"

किसान घर पहुंचा । मुसीबत उसे शराबख़ाने की ओर बुलाने लगी ।

"नहीं," किसान ने कहा, "मेरे पास पैसे नहीं हैं ।"

"अरे, किसान भाई, हमें पैसों का क्या करना है । भेड़ की खाल के अपने उस कोट की तरफ़ देखो । निश्चय ही तुम्हें अब उसकी ज़रूरत नहीं है । गर्मी आ रही है । अब तो तुम उसे पहनने से रहे । चलो, शराबख़ाने में चलें और वहां उसकी शराब लेकर पियें ।"

इस तरह किसान और मुसीबत शराबख़ाने में पहुंचे और वहां उन्होंने भेड़ की खाल का कोट देकर शराब पी ।

अगले दिन नशा उतरने के बाद, मुसीबत सिरदर्द से कराही और बड़बड़ायी । उसने अपने मालिक को एक बार फिर शराबख़ाने में चलने को कहा ।

"पैसा नहीं है," किसान ने कहा ।

"अरे, हमें पैसे की क्या जरूरत है ?" मुसीबत ने कहा । "अपनी बैलगाड़ी और स्लेज–गाड़ी ले लो । हमारे लिए यही काफ़ी होंगी ।"

किसान मुसीबत से छुटकारा नहीं पा सकता था । इसलिए वह बैलगाड़ी और स्लेज को शराबख़ाने में ले गया और वहां उसने और मुसीबत ने उनके बदले में शराब पी डाली ।

अगली सुबह मुसीबत और भी अधिक कराही तथा बड़बड़ायी । उसने फिर अपने मालिक को सिर का दर्द दूर करने के लिए पुकारा । नतीजा यह

हुआ कि इस बार किसान ने अपना हेंगा और लकड़ी का हल शराब को अर्पित कर दिया। किसान के पास जो कुछ था, उसने एक महीने में सब लुटा दिया, यहां तककि उसने अपनी झोपड़ी भी पड़ोसी के पास गिरवी रखकर रुपया शराबख़ाने को दे डाला। मगर फिर भी मुसीबत ने उसका पीछा न छोड़ा और उस पर दबाव डालती रही। "चलो शराबख़ाने! चलो शराबखाने!"

"नहीं, मुसीबत, तुम जो चाहो कहो, मेरे पास पीने के लिए अब और कुछ नहीं रहा।" किसान ने बेबसी के स्वर में कहा।

"है क्यों नहीं? क्या तुम्हारी बीवी के पास दो सराफ़ान नहीं हैं? तुम उसके पास एक रहने दो, मगर दूसरा तो हमें शराब पीने के लिए ले ही लेना चाहिए।" मुसीबत ने कहा।

किसान ने सराफ़ान ले लिया और उसकी भी शराब पी गया। इसके बाद उसने सोचा, "अच्छा, अब मेरे और मेरी बीवी के पास तो तन ढकने के कपड़े तक भी नहीं रहे। बिल्कुल कंगाल हो गये हैं हम।"

सुबह होने पर मुसीबत ने देखा कि किसान के पास अब और कुछ बाक़ी नहीं रहा तो वह बोली, "मालिक।"

"क्या है, मुसीबत?"

"मैं कहती हूं, पड़ोसी के पास जाओ और उससे उसकी गाड़ी और बैलों की जोड़ी मांग लाओ।"

वह पड़ोसी के पास गया और कहा, "थोड़ी देर के लिए मुझे अपनी बैलगाड़ी और बैलों की जोड़ी दे दो। इसके एवज में मैं सप्ताह भर तुम्हारा मुफ़्त काम करने को तैयार हूं।"

"तुम्हें किसलिए इसकी ज़रूरत है ?" पड़ोसी ने पूछा ।

"जंगल से कुछ लकड़ी लाने के लिए ।"

"अच्छा, ले जाओ, मगर बहुत अधिक बोझ मत लादना ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ! मैं भला ऐसा कर सकता हूं !"

किसान ने बैलों को अपनी झोपड़ी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया । वह और मुसीबत बैलगाड़ी में जा बैठे और खुले मैदान की तरफ़ चल दिये ।

"मालिक," मुसीबत ने पूछा, "इस मैदान के ठीक बीच में जो बड़ा पत्थर है, क्या तुमने उसे देखा है ?"

"हां, मैंने देखा है ।"

"अच्छा, तो गाड़ी को सीधे वहां ही ले चलो ।"

इस तरह वे उस जगह पहुंचकर रुक गये । वे बैलगाड़ी से नीचे उतरे । मुसीबत ने किसान को पत्थर उठाने के लिए कहा । किसान ने ज़ोर लगाया, मुसीबत ने सहायता की और अन्त में उन्होंने उसे उठा लिया । उस पत्थर के नीचे क्या दिखाई दिया ? सोने से भरा एक गड्ढा ।

"इस तरह मुंह बाये मत खड़े रहो," मुसीबत ने कहा, "जल्दी करो और सोने को बैलगाड़ी में लाद लो ।"

किसान अपने काम में जुट गया । उसने बैलगाड़ी को सोने से भर दिया और उस गड्ढे में एक सिक्का तक नहीं छोड़ा । जब उसने गड्ढे को ख़ाली देखा तो मुसीबत से कहा, "तुम एक बार फिर अच्छी तरह देख लो, मुसीबत ! मेरा मन कहता है कि यहां अभी कुछ धन और बाक़ी रह गया है ।"

मुसीबत देखने के लिए झुकी । बोली, "मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं देता ।"

"उधर देखो, वहां उस कोने में, वह क्या चमक रहा है ?"

"मुझे तो कुछ दिखाई नहीं देता ।"

"गड्ढे में उतरो तो दिखाई देगा ।"

मुसीबत गड्ढे में उतरी और ज्योंही उसने ऐसा किया कि किसान ने झटपट पत्थर ऊपर रख दिया ।

"ऐसा करना ही अच्छा होगा," किसान ने कहा, "वरना मुसीबत ! अगर मैं तुम्हें अपने साथ ले चलता तो शायद बहुत जल्दी तो नहीं, मगर अन्त में तुम इस सारे धन को भी शराब में उड़वा देती । अब तुम यहीं पड़ी सड़ती रहो !"

इसके बाद वह घर लौट आया । उसने सारा धन तहख़ाने में गाड़ दिया और पड़ोसी को बैलगाड़ी और बैल लौटा दिये । वह सोचने लगा कि किस तरह अपना घर–बार बसाए । उसने कुछ लट्ठे–शहतीर ख़रीदे और अपने लिए बढ़िया मकान बनवा लिया । वह उस मकान में अपने भाई से कहीं ज्यादा ठाठ–बाठ के साथ रहने लगा ।

दिन बीतते गये । फिर एक दिन यह किसान अपने अमीर भाई और भाभी को अपने जन्मदिन पर आमंत्रित करने के लिए शहर में गया ।

"यह तुम मुझसे क्या कह रहे हो ?" अमीर भाई ने उससे कहा, "तुम्हारे पास तो अपने खाने के लिए भी कुछ नहीं है, तुम मेहमानों को क्या खिलाओगे ? कैसे मना सकते हो तुम अपना जन्मदिन ?"

"कोई समय था जब कुछ नहीं था, मगर भगवान की कृपा से अब सबकुछ

है । जितना तुम्हारे पास है, उससे कुछ कम नहीं है । खुद आकर देख लो ।"

"अच्छा, तो मैं आऊंगा !"

अगले दिन अमीर भाई और उसकी बीवी तैयार होकर अपने भाई का जन्मदिन मनाने के लिए गये । वहां जाकर उन्होंने देखा कि उनका वह नंगा–भूखा भाई एक बहुत सुन्दर और नये मकान में रहता है । हर व्यापारी ऐसे आलीशान मकान का मालिक होने का सपना नहीं देख सकता था ! किसान ने उन्हें छत्तीस प्रकार के भोजन कराये और सभी प्रकार से उनकी ख़ातिरदारी की ।

अमीर भाई ने अपने भाई से पूछा, "यह बताओ कि तुम्हें इतनी दौलत कहां से मिली ?"

किसान ने उसे सबकुछ सच–सच बता दिया । कैसे उस पर मुसीबत ने दबाव डाला और कैसे उसने ग़म ग़लत करने के लिए शराबख़ाने में अपनी आख़िरी कौड़ी तक दे डाली । अन्त में सिर्फ़ उसके पास उसकी जान ही बाक़ी रह गयी थी । तब मुसीबत ने उसे मैदान में वह ख़जाना दिखाया और उसने वह ख़जाना हासिल करके मुसीबत से छुटकारा पा लिया ।

ईर्ष्या की आग में जलते हुए उस अमीर भाई ने सोचा, "उस मैदान में जाकर, पत्थर उठाकर, मैं मुसीबत को मुक्त कर दूंगा, ताकि वह मेरे भाई को फिर से बरबाद कर दे । तब वह मेरे सामने अपनी अमीरी की कभी डींग नहीं हांक सकेगा ।"

ऐसा सोचकर उसने अपनी बीवी को घर भेज दिया और स्वयं उस मैदान की तरफ़ चल दिया । वह पत्थर के पास पहुंचा और उसे एक तरफ़ हटाकर

उसने मुसीबत को बाहर निकाला ।

"जाओ, मेरे भाई के पास, जाओ," उसने कहा, "और उसकी आख़िरी कौड़ी तक बरबाद कर डालो ।"

"नहीं, भले आदमी," मुसीबत ने जवाब दिया । "अब मैं उसके पास फिर से नहीं जाऊंगी । मैं तुम्हारे पास रहना अधिक बेहतर समझती हूं । तुम बहुत दयावान इन्सान हो, तुमने मुझे बाहर निकाला है, जबकि उस दुष्ट ने तो मुझे ज़मीन के अन्दर बन्द कर दिया था !"

थोड़े ही अरसे में ईर्ष्यालु भाई बरबाद हो गया । वह एक अमीर आदमी के बजाय, एक नंगा-भूखा भिखारी बनकर रह गया । ❑



३। साहस का पुतला

एक बार कीयेव के पास एक विधवा रहती थी। उसका नाम ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना था। उसका दोब्रीन्या नाम का एक बहादुर बेटा था। वह उसे बेहद प्यार करती थी। कीयेव में रहनेवाले सभी लोग उसकी प्रशंसा के

गीत गाते थे । वह सुडौल, लम्बा और खूबसूरत था । लड़ाई में दिलेरी से लड़ता और दावतों में खूब हंसता-चहकता । उसने पढ़ा-पढ़ाया भी काफ़ी था । वह हाज़िरजवाब और गीतकार भी था । गूसली बजाना भी जानता था । वह मधुर और भले स्वभाव का था, कभी किसी से कड़वी बात न कहता और किसी के साथ बुरा व्यवहार न करता । इसलिए लोग उसे रहमदिल दोब्रीन्या कहते थे ।

गर्मी में एक दिन दोब्रीन्या के दिल में नदी में नहाने की बड़ी इच्छा हुई । वह अपनी मां, ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना के पास गया और बोला, "मां, मुझे पुचाय दरिया के ठंडे पानी में नहाने की इजाज़त दो । मैं गर्मी से बहुत तंग आ गया हूं ।"

ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना को बहुत परेशानी हुई और वह घर पर ही रहने के लिए आग्रह करने लगी, "मेरे प्यारे बेटे दोब्रीन्या," उसने कहा, "पुचाय दरिया पर मत जाओ । वह बहुत ख़तरनाक और भयानक दरिया है । इसकी एक धारा से आग निकलती है, दूसरी से अंगारे और तीसरी से धुआं ।"

"अच्छा मां," दोब्रीन्या ने जवाब दिया, "कम-से -कम मुझे घोड़े पर सवार होकर किनारे-किनारे घूमने और ताज़ी हवा लेने की अनुभति तो दे दो ।"

ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना ने उसे ऐसा करने की अनुमति दे दी । दोब्रीन्या ने सवारी की तैयारी शुरू कर दी ।

उसने सफ़र की पोशाक पहनी, सिर पर ऊंचा यूनानी हैट लगाया, अपना भाला, तीर-कमान, तेज़ तलवार और चाबुक उठाया ।

वह अपने बढ़िया घोड़े पर सवार हुआ । उसने अपने नौजवान नौकर से साथ चलने के लिए कहा और सफ़र के लिए निकल पड़ा ।

एक घंटा गुज़रा, फिर दूसरा, मगर दोब्रीन्या था कि घोड़ा दौड़ाता गया। गर्मी का सूरज उसके सिर के ऊपर तप रहा था। अपनी मां का आदेश भूलकर उसने घोड़े का मुंह पुचाय दरिया की तरफ़ मोड़ दिया।

दरिया की तरफ़ से ठंडी हवा का झोंका आया। उसकी तबीयत बाग–बाग हो गई।

दोब्रीन्या नीचे उतरा, घोड़े की लगाम युवक नौकर की तरफ़ फेंककर बोला, "यहां ठहरो और घोड़े की निगरानी करो।"

तब उसने अपना यूनानी टोप और सफ़री पोशाक उतारी, अपने सभी हथियार घोड़े की पीठ पर रखे और स्वयं दरिया में कूद गया।

"अजीब बात है कि मेरी मां ने पुचाय दरिया के बारे में ऐसी बातें कही हैं। यह बिल्कुल ख़तरनाक नहीं, बल्कि बरसाती नाले की तरह शान्त है।"

दोब्रीन्या के मुंह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि अचानक आकाश अन्धकारपूर्ण हो गया। आकाश में कहीं कोई बादल दिखाई नहीं दे रहा था, और न वर्षा हुई, मगर गर्जन सुनाई दे रही थी। कोई तूफ़ान नहीं आया, किन्तु बिजली कौंध रही थी।

दोब्रीन्या ने गर्दन ऊंची की तो सांपरूपी राक्षस ज़्मेई गोरीनिच को अपनी ओर तेज़ी से उड़कर आते देखा। वह बहुत भयानक राक्षस था। उसके तीन सिर, सात दुमें, लोहे के पंजे और तांबे के चमकते हुए नाख़ून थे। उसकी नाक से शोले और कानों से धुआं निकल रहा था।

राक्षस ने दोब्रीन्या को देखा और गरजकर कहा, "ओ, बड़े–बूढ़ों का कहना था कि मैं दोब्रीन्या निकीतिच के हाथों मारा जाऊंगा। मगर दोब्रीन्या तो खुद ही मेरे चंगुल में आ फंसा है। मैं उसके साथ जैसा चाहूं, बर्ताव कर सकता

हूं । मैं उसे ज़िन्दा खा सकता हूं या कैदी बनाकर गुफ़ा में ले जा सकता हूं । बहुत–से रूसी लोग मेरे गुलाम हैं, सिर्फ दोब्रीन्या की ही कमी थी ।"

दोब्रीन्या ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, "ठहरो, दुष्ट राक्षस, पहले तुम दोब्रीन्या को अपने वश में तो कर लो, फिर अपनी जीत की डींग हांकना । दोब्रीन्या अभी तक तो तुम्हारे हाथों में आया नहीं ।"

दोब्रीन्या कमाल का तैराक था । वह ग़ोता लगाकर नदी की तह में जा पहुंचा और पानी के नीचे तैरता रहा । फिर वह ऊंचे तट के पास बाहर आ गया और तेज़ी से अपने घोड़े की ओर लपका । मगर उसे अपने घोड़े का नामोनिशान तक न मिला । उसका युवा नौकर उसे ले उड़ा था । राक्षस की गर्जना सुनकर उसका दम निकल गया था और वह जल्दी से घोड़े पर चढ़कर दोब्रीन्या के हथियारों समेत वहां से रफूचक्कर हो गया था ।

दोब्रीन्या के पास राक्षस से लड़ाई करने के लिए दो ख़ाली हाथों के सिवा कुछ न था । अब राक्षस गरजता हुआ दोब्रीन्या पर लपका और चिनगारियों से उसका गोरा बदन झुलसाने लगा ।

उस बहादुर युवक का दिल भीतर–ही–भीतर तड़पने लगा ।

उसने अपने चारों ओर निगाह दौड़ायी, मगर कोई भी चीज़ उसे दिखाई न दी, यहां तककि कोई डंडा या कोई पत्थर भी पास में पड़ा हुआ नहीं दीख पड़ा । उसके सभी ओर पीली रेत और उस पर पड़े हुए उसके यूनानी टोप के अतिरिक्त और कुछ भी न था ।

दोब्रीन्या ने अपना टोप उठाकर उसे पीली रेत से भर लिया । उसने हाथ घुमाकर टोप पूरे ज़ोर से ज़्मेई गोरीनिच पर दे मारा । ज़्मेई का एक सिर टूटकर गिर गया ।

तब उसने अपनी पूरी शक्ति से राक्षस पर हमला किया । उसे ज़मीन पर चित करके उसके सीने पर चढ़ बैठा । वह उसके बाकी दो सिरों को भी तोड़ने वाला था कि ज़्मेई गोरीनिच ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "ओ, अच्छे दोब्रीन्या, बहादुर आदमी, मुझे छोड़ दो, मारो नहीं । मैं वचन देता हूं कि तुम्हारे सभी आदेश मानूंगा । मैं कसम खाता हूं कि कभी तुम्हारे देश, महान और विशाल रूस में नहीं आऊंगा, कभी किसी रूसी को बंदी नहीं बनाऊंगा । सिर्फ़ मुझे ज़िन्दा छोड़ दो । मेरे बच्चों पर तरस खाओ ।"

दोब्रीन्या राक्षस के धोखे में आ गया और यह सोचकर कि दुष्ट राक्षस ठीक कह रहा है, उसे छोड़ दिया ।

राक्षस बादलों में उड़ता हुआ सीधा कीयेव की ओर गया और राजा व्लादीमिर के बगीचे में जा पहुंचा । उसी समय राजा व्लादीमिर की भानजी, कुमारी ज़बावा पुत्यातिश्ना, बगीचे में हवाख़ोरी के लिए आयी हुई थी ।

ज़्मेई ने शाहज़ादी देखी तो बेहद खुश हुआ । वह बादलों से उसकी ओर झपटा और अपने तांबे के नाखूनों से उसे दबा सोरोचिन्स्क पहाड़ों में उठा ले गया ।

इसी बीच दोब्रीन्या ने अपने नौकर को ढूंढ़ा और अपनी सफ़री पोशाक पहनने लगा । तभी अचानक आकाश में घटा–सी घिरी और गर्जना सुनाई दी । दोब्रीन्या ने अपना सिर ऊपर उठाया तो ज़्मेई गोरीनिच को कीयेव की ओर से ज़बावा पुत्यातिश्ना को नाखूनों में दबाये आते देखा ।

दोब्रीन्या को बड़ा दुःख और परेशानी हुई । वह अपने घर बहुत उदास–उदास लौटा और गुमसुम होकर एक बेंच पर बैठ गया ।

उसे ऐसे उदास देखकर उसकी मां ने पूछा, "प्यारे बेटे, इतने उदास क्यों हो ? तुम्हें क्या दुःख है, दोब्रीन्या ?"

"मुझे कोई दुःख नहीं है, मां, " दोब्रीन्या ने जवाब दिया, "उदास भी मैं नहीं हूं । मगर मुझे घर पर रहना अच्छा नहीं लगता । मैं सोचता हूं अगर मैं कीयेव में राजा व्लादीमिर के महल में जाऊं तो अच्छा हो, क्योंकि आज वहां एक मज़ेदार दावत हो रही है ।"

"कीयेव में मत जाओ, दोब्रीन्या," उसकी मां ने कहा, "राजमहल में मत जाओ । मेरा दिल कहता है कि तुम्हारे लिए वहां जाना अच्छा नहीं । अगर तुम चाहो तो हम अपने घर पर ही दावत कर सकते हैं ।"

मगर दोब्रीन्या ने मां की बात अनसुनी कर दी और वह कीयेव में राजा व्लादीमिर के महल की तरफ़ रवाना हो गया ।

कीयेव पहुंचकर वह सीधा राजा के कमरे में गया । मेज़ों पर तरह-तरह के पकवान लगे हुए थे और पास ही मीठी शराब के ढोल भरे रखे थे । मगर सभी मेहमान सिर झुकाए बैठे थे, न तो कोई कुछ खा रहा था, न पी रहा था ।

राजा अपने कमरे में इधर-उधर घूम रहा था । उसने अपने किसी मेहमान से खाना शुरू करने के लिए नहीं कहा । रानी मुंह ढके बैठी थी और वह दूसरों की तरफ़ देखती तक भी न थी ।

राजा व्लादीमिर बोला, "प्यारे मेहमानो, मैं जानता हूं कि आज की दावत बड़ी फीकी रहेगी । हमारी रानी बेहद दुःखी है और मुझे भी कुछ कम ग़म नहीं । दुष्ट ज़्मेई गोरीनिच, हमारी प्यारी भानजी को उठा ले गया है । क्या तुममें कोई ऐसा माई का लाल है, जो सोरोचिन्स्क पहाड़ पर जाकर शहज़ादी की तलाश कर सकता हो और उसे आज़ाद कराने की हिम्मत रखता हो ?"

मेहमान एक–दूसरे के पीछे मुंह छिपाने लगे । लम्बे क़दवाले दरमियाने क़दवालों के पीछे, दरमियाने क़दवाले नाटों के पीछे और नाटे अपना मुंह ढांप–कर चुप्पी लगा गये ।

अचानक एक बहादुर युवक अल्योशा–पोपोविच मेज़ से उठा और उसने कहा, "हे, महाप्रतापी राजा ! मैं जो कहता हूं, उसे सुनिये । कल मैं बाहर मैदानों में था और पुचाय नदी के पास मैंने रहमदिल दोब्रीन्या को देखा था । ज़्मेई गोरीनिच के साथ मैंने उसे मित्र की भांति बातचीत करते सुना और दोब्रीन्या ने उसे अपना छोटा भाई कहा । राक्षस की गुफ़ा में दोब्रीन्या को भेजिये । वही आपकी प्यारी भानजी को रिहा करा सकता है । यह तो निश्चित ही समझिये कि ज़्मेई गोरीनिच आपकी भानजी को बिना लड़ाई किये, अपने भाई को सौंप देगा ।"

"दोब्रीन्या ज़्मेई का भाई बन गया है !" राजा व्लादीमिर को यह जानकर दोब्रीन्या पर बहुत गुस्सा आया । उसने दोब्रीन्या की ओर मुड़कर कहा, "अगर ऐसी बात है तो, दोब्रीन्या, तुम अपने घोड़े पर सवार होकर जितनी जल्दी हो सके, सोरोचिन्स्क पर्वत पर पहुंचो । वहां जाकर तुम मेरी प्यारी भानजी की तलाश करो और उसे क़ैद से रिहाई दिलवाकर यहां लाओ । अगर तुम उसके बिना लौटे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा ।"

दोब्रीन्या वीर युवक अपना मुंह लटकाये हुए मेज़ से उठकर बाहर आया, घोड़े पर सवार हुआ और घर की तरफ़ चल दिया ।

उसकी मां उससे मिलने के लिए बाहर आयी । वह उसे देखते ही समझ गयी कि ज़रूर कोई बुरी बात हो गयी है । उसका चेहरा बहुत बदला हुआ था ।

"मेरे बेटे दोब्रीन्या, तुम्हें क्या हैरानी है ?" उसने पूछा। "किसलिए इतने उदास हो ? ऐसी कौन–सी मुसीबत आ पड़ी है ? हो सकता है कि दावत में तुमसे कुछ बुरा बर्ताव किया गया हो ? या तुम्हें शराब न देकर उन्होंने प्याला आगे बढ़ा दिया हो, या तुम्हें तुम्हारे योग्य सम्मान न दिया हो ?"

"नहीं मां" दोब्रीन्या ने जवाब दिया, "मुझसे कोई बुराई नहीं की गयी। उन्होंने मुझे दिये बिना शराब का प्याला भी आगे नहीं बढ़ाया और मुझे मेरे योग्य स्थान भी दिया गया।"

"अगर ऐसी बात है तो तुम फिर मुंह किसलिए लटकाये बैठे हो ?"

"बात यह है कि राजा व्लादीमिर ने मुझे एक बड़ा भारी काम सौंपा है। मुझे सोरोचिन्स्क पर्वत पर जाकर राजा की भानजी को खोजने और उसे ज़्मेई गोरीनिच से मुक्त करवाने का आदेश दिया गया है।"

मां बहुत डरी, मगर फिर भी न तो उसने आंसू बहाये और न अपने को उदास होने दिया। वह सोचने लगी कि क्या करे ?

"अभी जाकर सो रहो मेरे बेटे," उसने कहा। "आराम करके अपने को ताज़ा दम कर लो। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

दोब्रीन्या जाकर सो रहा। नदी के तेज़ बहते पानी की तरह उसके खर्राटे सुनाई देने लगे।

मगर मां जागती रही। वह एक बेंच पर बैठ गयी और रात भर सात रस्सियों का, सात अलग–अलग रंगों का, सात पट्टियोंवाला एक चाबुक बनाती रही।

सूरज की पहली किरण के साथ उसने अपने लड़के को जगाया और कहा, "उठो उठो, मेरे बेटे। कपड़े पहनकर जल्दी से पुराने अस्तबल में

जाओ । तीसरी कोठरी का दरवाज़ा नहीं खुलेगा, क्योंकि वह आधे के लगभग लीद में धंसा पड़ा है । मगर तुम अपनी पूरी ताक़त से उसे धकेलकर खोल लेना । उस कोठरी में तुम्हें तुम्हारे दादा का कत्थई घोड़ा दिखाई देगा । वह अपनी इसी कोठड़ी में पिछले पन्द्रह वर्षों से घुटने–घुटने तक लीद में खड़ा है । तुम उसे अच्छी तरह साफ़ करो, संवारो और खिला–पिलाकर घर के ओसारे के पास लाओ ।"

दोब्रीन्या अस्तबल में गया । उसने दरवाज़े को जोड़ों से अलग करके कत्थई घोड़े को बाहर निकाला । वह उसे बरामदे में ले जाकर उस पर काठी सजाने लगा । उसने पहले उसकी पीठ पर एक कपड़ा रखा, उसके ऊपर नमदा बिछाया तथा उसके बाद रेशम से काढ़ा गया और सोने के काम से सजा हुआ क़ीमती चेरकासी ज़ीन लगाया । रेशम के बारह पट्टों से उसने कसकर ज़ीन बांधा और फिर सोने की लगाम पहनायी । तब मां घर से बाहर आयी और उसने दोब्रीन्या को सात पट्टियोंवाला चाबुक दिया ।

"जब तुम सोरोचिन्स्क पहाड़ पर पहुंचोगे," उसने कहा, "उस समय ज़्मेई गोरीनिच कहीं गया हुआ होगा । तुम अपने घोड़े को सीधे उसकी गुफ़ा की तरफ़ दौड़ाना और राक्षस–संपोलियों को घोड़े के सुमों के नीचे रौंद डालना । वे कत्थई घोड़े की टांगों से लिपट जायेंगे और तब तुम घोड़े के कानों पर चाबुक लगाना । कत्थई घोड़ा उछलेगा और संपोलियों को अपनी टांगों से झटककर अलग कर देगा और उन सभी को कुचलकर मार डालेगा ।"

सेब के पेड़ से जैसे उसकी टहनी टूटी और सेब टूटकर अलग जा गिरा, इसी तरह प्यारी मां से उसका प्यारा बेटा बिछुड़कर खूनी और भयानक लड़ाई लड़ने चल दिया ।

लगातार होनेवाली बरसात की भांति दिन गुज़रते गये और नदी के तेज़ बहाव की तरह हफ़्ते बीत गये । वह चलता–चलता अन्त में सोरोचिन्स्क पहाड़ पर पहुंचा ।

राक्षस की गुफ़ा पहाड़ की चोटी पर थी और पहाड़ के इर्द–गिर्द की सारी जगह संपोलियों से भरी पड़ी थी । वे कत्थई घोड़े की टांगों से लिपट गये और उसके सुमों को दांतों से काटने लगे । कत्थई घोड़े के लिए अब भागना सम्भव न रहा और वह घुटनों के बल गिरने ही वाला था कि दोब्रीन्या को अपनी मां का आदेश याद आया । उसने सात रेशमी धागों का बना हुआ चाबुक निकाला और कत्थई घोड़े के कानों के बीच मारने और कहने लगा, "ऊपर को उछलो, कत्थई घोड़े, और संपोलियों को अपनी टांगों से झटककर अलग कर दो ।"

चाबुक के हर प्रहार के साथ कत्थई घोड़े में नई शक्ति आती गयी । वह ऊंचा उछलने लगा और तेज़ी से पत्थरों को दूर–दूर फेंकने और संपोलियों को कुचलने लगा । वह उन्हें अपनी टापों से मारने और दांतों से काटने लगा । इस तरह उसने उन सभी को कुचलकर मार डाला ।

तब दोब्रीन्या घोड़े से नीचे उतरा । उसने अपने दायें हाथ में तेज़ तलवार और बायें में गदा उठायी तथा राक्षस की गुफ़ाओं की ओर चल दिया ।

दोब्रीन्या के क़दम उठाते ही आकाश धुंधला हो गया और ज़ोर का गर्जन सुनाई पड़ा । पहाड़ का राक्षस ज़्मेई गोरीनिच, अपने नाखूनों में एक मुर्दा दबाये हुए तेज़ी से उड़ता हुआ उसकी तरफ़ आया । उसके जबड़ों से शोले और कानों से धुआं निकल रहा था । उसके तांबे के नाखून आग की तरह चमक रहे थे ।

ज़्मेई गोरीनिच ने दोब्रीन्या को देखा तो मुर्दे को नीचे फेंका और गरजा, "दोब्रीन्या, तुमने किसलिए अपना वचन तोड़ा है ? किसलिए तुमने मेरे बच्चों को कुचलकर मार डाला है ?"

"ओ, दुष्ट सांप !" दोब्रीन्या चिल्लाया, "तुम मुझे कहते हो कि मैंने अपना वचन तोड़ा है ? पहले यह बताओ कि तुम किसलिए कीयेव में गये थे ? किसलिए तुम वहां से ज़बावा पुत्यातिश्ना को उठा लाये हो ? तुम बिना लड़ाई किये उसे मुझे लौटा दो । तभी मैं तुम्हारा अपराध भूल सकूंगा ।"

"कभी नहीं !" राक्षस गरजा, "ज़बावा पुत्यातिश्ना तो तुम्हें कभी नहीं मिलेगी ! मैं उसे और तुम्हें भी खा जाऊंगा और सभी रूसियों को अपना क़ैदी बना लूंगा ।"

दोब्रीन्या के तन–बदन में आग लग गयी और वह राक्षस पर टूट पड़ा ।

उन दोनों के बीच बड़ी भयंकर लड़ाई हुई ।

सोरोचिन्स्क पहाड़ से चट्टानें नीचे लुढ़क गयीं, बड़े–बड़े बलूत वृक्ष जड़ से उखड़ गये और घास धंसकर जमीन के भीतर चली गयी ।

वे पूरे तीन दिन और तीन रात तक लड़ते रहे । जब ज़्मेई गोरीनिच का पलड़ा भारी हो जाता, तो वह दोब्रीन्या को उठाकर आकाश की ओर फेंक देता । मगर फिर दोब्रीन्या को चाबुक की याद आयी । उसने उसे बाहर निकाला और राक्षस के सिर पर मारने लगा । ज़्मेई गोरीनिच घुटनों के बल गिर पड़ा और दोब्रीन्या बायें हाथ से उसे जमीन पर चित लिटाकर दायें हाथ से चाबुक मारता रहा । वह उसे उस रेशमी चाबुक से मारता रहा, मारता रहा । राक्षस की ताक़त कम होती–होती बिल्कुल ख़त्म हो गयी । तब दोब्रीन्या ने उसके सारे सिर काट डाले ।

राक्षस का काला रक्त ज़ोर से बहने लगा और वह पूरब से पश्चिम तक ज़मीन पर फैल गया। दोब्रीन्या, कमर तक उसी रक्त से सन गया।

दोब्रीन्या तीन दिन और तीन रातों तक राक्षस के खून में कमर तक लथपथ होकर खड़ा रहा। उसकी टांगों में खून जम गया और सर्दी ने उसके दिल पर असर करना शुरू किया। रूसी धरती राक्षस के रक्त की एक बूंद भी पीने को तैयार न थी।

दोब्रीन्या ने अपनी मौत को पास आते देखा तो सात रंगों के रेशमी धागों से बना हुआ चाबुक बाहर निकालकर धरती पर ज़ोर से मारने लगा। मारते हुए वह बार–बार कहता, "मां धरती, फटो और राक्षस का रक्त चूसो !"

धरती फट गयी और उसने राक्षस का खून चूस लिया।

दोब्रीन्या निकीतिच ने कुछ देर आराम किया, नहाया–धोया और अपना कवच साफ़ किया। तब राक्षस की गुफ़ाओं की ओर रवाना हुआ।

सब गुफ़ाओं के दरवाज़े तांबे के थे, उनमें लोहे के खटके लगे थे और सोने के ताले लटक रहे थे।

मगर दोब्रीन्या ने तांबे के दरवाज़े, ताले और खटके तोड़ डाले। फिर वह पहली गुफ़ा में दाखिल हुआ। गुफ़ा ज़ारों, राजाओं और राजकुमारों से भरी हुई थी। ये चालीस अलग–अलग देशों और दिशाओं के रहनेवाले थे। मामूली सिपाही तो बेशुमार थे।

"विदेशी बादशाहो और अजनबी देशों के ज़ारो और मामूली सिपाहियो। मैं जो कहता हूं, उसे सुनो ! तुम बाहर निकलकर सूरज की रोशनी का मज़ा लो और अपने–अपने देश लौट जाओ, मगर रूसी बहादुर को कभी मत भूलना ! उसकी मदद के बिना उम्र भर राक्षस के कैदी रहते।"

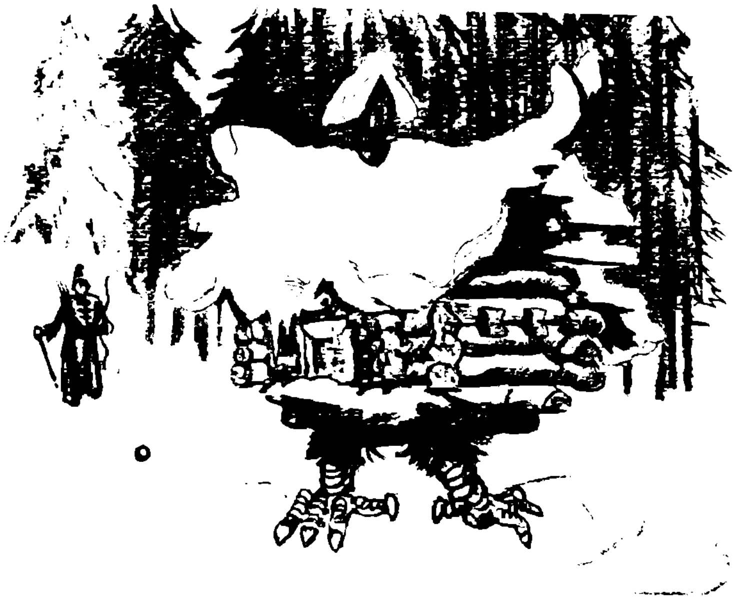
एक–एक करके वे सभी बाहर आये। उन्होंने दोब्रीन्या को नमस्कार किया और कहा, "ऐ रूसी बहादुर ! हम तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे !"

दोब्रीन्या आगे बढ़ता गया। एक के बाद दूसरी गुफ़ा खोलकर उसने राक्षस के सभी क़ैदी छोड़ दिये। इन लोगों में बूढ़े थे और नवयुवतियां थीं, बच्चे थे और बूढ़ी औरतें थीं, रूसी थे और विदेशी थे, ज़बावा पुत्यातिश्ना उनमें नहीं थी।

ग्यारह गुफ़ाएं पार कर लेने के बाद वह बारहवीं गुफ़ा में पहुंचा। ज़बावा पुत्यातिश्ना यहीं थी। वह एक गीली दीवार के साथ लटकी हुई थी और हाथ सोने की ज़ंजीरों से जकड़े हुए थे। दोब्रीन्या ने ज़ंजीरें काटकर शाहज़ादी को दीवार से नीचे उतारा। वह उसे अपनी बांहों में समेट कर गुफ़ा से बाहर, सूरज की रोशनी में लाया। धूप से उसकी आंखें चौंधियाने लगीं। उसने उन्हें बन्द कर लिया। वह दोब्रीन्या की ओर भी नहीं देख सकी। तब दोब्रीन्या ने उसे हरी घास पर लिटाकर खिलाया–पिलाया। उसने उसे अपने लबादे से ढक दिया और खुद भी आराम करने के लिए लेट गया।

सूरज छिप गया तो दोब्रीन्या जागा। उसने अपने घोड़े पर ज़ीन कसी और शाहज़ादी को जगाया। दोब्रीन्या ने शाहज़ादी ज़बावा को अपने आगे बिठाया और घोड़े पर सवार होकर अपने सफ़र पर चल दिया। उनके इधर–उधर अनगिनत लोग खड़े थे। उन सबने झुककर दोब्रीन्या को नमस्कार किया, और अपने मुक्ति–दाता को बार–बार धन्यवाद दिया। फिर वे जल्दी से अपने देश की तरफ़ रवाना हो गये।

दोब्रीन्या ने घोड़े का मुंह पीली स्तेपी की ओर मोड़ा। वहां से वह अपने घोड़े को एड़ लगाता हुआ ज़बावा पुत्यातिश्ना के साथ कीयेव की ओर चल दिया। ❑



४/ कसाले का काम

किसी जगह एक ज़ार राज्य करता था। वह अकेला और कुंवारा था। उसने एक तीरंदाज़ को नौकर रखा हुआ था, जिसका नाम अन्द्रेई था।

एक दिन तीरंदाज़ शिकार के लिए गया। वह दिन-भर जंगलों में घूमता रहा, मगर एक भी शिकार हाथ न लगा। बहुत देर हो गयी थी, इसलिए वह निराश होकर घर की ओर लौट चला। अचानक उसने एक पेड़ पर एक कबूतरी बैठी देखी।

"मैं इसी को क्यों न निशाना बनाऊं ?" उसने सोचा । उसके तीर ने कबूतरी को बींध डाला और वह पेड़ से नीचे धरती पर आ गिरी । अन्द्रेई ने उसे उठा लिया और उसकी गर्दन मरोड़कर थैले में डालने ही वाला था कि कबूतरी इन्सानी आवाज़ में बोली, "मुझे मत मारो, तीरंदाज़ अन्द्रेई । मेरी गर्दन मत मरोड़ो । मुझे ज़िन्दा घर ले जाओ और खिड़की में रख दो । मगर ध्यान रखना, ज्यों ही मैं ऊंघने लगूं, ज़ोर से मुझ पर दायां हाथ जमा देना । तुम्हारी क़िस्मत का सितारा चमक उठेगा ।"

तीरंदाज़ अन्द्रेई को अपने कानों पर विश्वास न हुआ । "यह सब क्या है ?" उसने सोचा, "यह तो बिल्कुल कबूतरी दिखाई देती है, फिर भी इन्सान की तरह बातचीत करती है ।"

जो हो, वह कबूतरी को घर ले गया । उसे खिड़की में बिठाकर स्वयं उसके पास खड़ा हो गया और उसके ऊंघने की प्रतीक्षा करने लगा ।

धीरे-धीरे कबूतरी ने अपना सिर पंखों के बीच छिपा लिया और ऊंघने लगी । कबूतरी ने जैसे कहा था, अन्द्रेई ने वैसे ही किया । कबूतरी ज़मीन पर गिरी और गिरकर शाहज़ादी मारिया बन गयी । वह पौ फटने के समय के आसमान-सी सुन्दर थी । शायद ही कभी कोई ऐसी सुन्दरी धरती पर पैदा हुई होगी ।

शाहज़ादी मारिया ने अन्द्रेई से कहा, "तुमने मुझे पकड़ तो लिया, अब अपने साथ रखने की भी व्यवस्था करो । मुझसे शादी कर लो । मैं तुम्हारी ईमानदार तथा प्यारी पत्नी बनकर रहूंगी ।"

इस तरह मामला तय हो गया । तीरंदाज़ अन्द्रेई ने शाहज़ादी मारिया से शादी कर ली और वह तथा उसकी पत्नी बहुत खुशी-खुशी एक साथ रहने लगे । मगर तीरंदाज़ अब भी अपने कर्तव्य को नहीं भूला । पौ फटते ही वह

जंगल में जाता, जंगली मुर्गों का शिकार करता और उन्हें शाही रसोई में दे आता। इस तरह कुछ समय बीत गया और तब एक दिन शाहज़ादी मारिया बोली :

"हम बहुत ग़रीबी की जिन्दगी बिता रहे हैं, अन्द्रेई।"

"हां, यह तो सच है।"

"अगर तुम सौ रूबल उधार लेकर मुझे उससे रेशमी धागे ख़रीदकर ला दो, तो मैं कोई ऐसा उपाय करूंगी कि हमारी जिन्दगी सुधर जाये।"

अन्द्रेई ने वही किया, जो शाहज़ादी ने कहा था। वह अपने दोस्तों के पास गया, उसने एक रूबल किसी से मांगा, दो किसी से, इसी तरह रक़म इकट्ठी करके रंग-बिरंगे रेशमी धागे ख़रीद लाया। वे धागे उसने अपनी बीवी को दिये। बीवी ने कहा, "अब जाकर सो जाओ। रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई जाकर सो गया और शाहज़ादी मारिया बुनने के लिए बैठ गयी। वह रातभर बुनती रही और उसने उन धागों का ऐसा क़ालीन बुना जैसाकि दुनिया ने पहले कभी न देखा था। उस क़ालीन पर सारे राज्य की तसवीर बनी हुई थी। उसमें नगर और गांव, वन और खेत, आकाश में उड़ते पक्षी, जंगली दरिन्दे, समुद्र में तैरती मछलियां और चमकते हुए सूरज-चांद सभी दिखाई देते थे।

सुबह होने पर शाहज़ादी मारिया ने क़ालीन अपने पति को दिया और कहा, "इसे सौदागरों की गली में जाकर बेच दो। मगर ख़्याल रखना कि तुम अपनी तरफ़ से कोई क़ीमत मत बताना, जो कुछ वे दें, वही ले लेना।"

अन्द्रेई ने क़ालीन अपने कंधे पर लटकाया और सौदागरों की दुकानों के सामने घूमने लगा।

उसी समय एक सौदागर दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा और कहने लगा, "भलेमानस, तुम इसकी क्या क़ीमत लोगे ?"

"तुम सौदागर हो, तुम्हीं बता दो ।"

सौदागर सोचता रहा, सोचता रहा, मगर वह कुछ फ़ैसला न कर सका । तब एक दूसरा सौदागर आया, उसके बाद तीसरा और फिर एक और । जल्द ही वहां सौदागरों की भीड़ लग गयी । वे सभी क़ालीन को देख–देखकर हैरान होते रहे, पर क़ीमत का फ़ैसला न कर सके ।

तभी ज़ार का सलाहकार अपनी गाड़ी में वहां से गुज़रा और भारी भीड़ देखकर उसके मन में जिज्ञासा हुई कि वह मामले की जांच करे । वह गाड़ी से बाहर आया । मुश्किल से भीड़ को चीरता हुआ वह आगे गया और बोला, "समुद्र–पार के सौदागरों ! यहां क्या हो रहा है ?"

"हम इस क़ालीन की क़ीमत निश्चित नहीं कर पा रहे हैं ।" उन्होंने कहा ।

ज़ार के सलाहकार ने क़ालीन देखा तो ठगा–सा रह गया ।

"सच–सच बताओ, ऐ तीरंदाज़ ! कहां से मिला तुम्हें यह अद्‌भुत क़ालीन ?" उसने पूछा ।

"मेरी बीवी ने बुना है ।" तीरंदाज़ ने जवाब दिया ।

"और तुम इसकी कितनी क़ीमत चाहते हो ?"

"मैं नहीं जानता । मेरी बीवी ने कहा था कि मैं वही क़ीमत ले लूं जो दी जाये ।"

"तो ये रहे दस हजार रूबल, तीरंदाज़ ।"

अन्द्रेई ने रूबल लिये और क़ालीन देकर घर चला गया। ज़ार का सलाहकार महल में पहुंचा और उसने वह क़ालीन ज़ार को दिखाया।

ज़ार अपनी आंखों के सामने सारे राज्य का चित्र देखकर दंग रह गया। कुछ देर के लिए तो मानो उसकी सांस रुक गयी।

"तुम जो भी चाहो, कहो, मगर मैं तुम्हें यह क़ालीन वापस नहीं दूंगा!" ज़ार ने कहा।

उसने बीस हजार रूबल मंगवाकर सलाहकार को सौंप दिये। सलाहकार ने रक़म ले ली और सोचा, "कोई बात नहीं, मैं अपने लिए इससे भी बेहतर क़ालीन बनवा लूंगा।"

वह अपनी गाड़ी में सवार होकर नगर की उस छोटी-सी बस्ती में पहुंचा जहां तीरंदाज़ रहता था। उसने तीरंदाज़ अन्द्रेई की झोपड़ी खोज निकाली और दरवाज़े पर दस्तक दी। शाहज़ादी मारिया ने दरवाज़ा खोला। ज़ार के सलाहकार का एक पांव दहलीज़ के ऊपर था और दूसरा नीचे ही जमकर रह गया। वह तो जैसे सकते में आ गया। उसकी ज़बान से एक शब्द भी नहीं फूटा और वह इतना भी भूल गया कि किसलिए आया है। उसके सामने एक ऐसी सुन्दरी खड़ी थी कि अगर वह ज़िन्दगी भर उसे देखता रहता, तो भी शायद उसकी आंखों की प्यास न बुझती।

शाहज़ादी मारिया ने कुछ देर इन्तज़ार किया और जब वह कुछ भी न बोला तो उसने उसको कन्धे से पकड़कर घुमा दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद सलाहकार ने अपने को सम्भाला और खोया-सा घर लौट आया। मगर उस दिन के बाद वह खाना-पीना भूल गया और हर समय तीरंदाज़ की पत्नी की याद में डूबा रहने लगा।

ज़ार ने देखा कि उसका सलाहकार परेशान रहता है, तो उससे उसका कारण पूछा ।

वह बोला, "कुछ दिन हुए, मैंने तीरंदाज़ अन्द्रेई की पत्नी देखी थी । वह मेरा दिल निकालकर ले गयी । किसी तरह भी उसे अपने मन से नहीं निकाल पाता हूं । उसने तो मुझ पर जादू–टोना–सा कर दिया है ।"

ज़ार ने सोचा कि वह तीरंदाज़ की बीवी को देखेगा । उसने साधारण कपड़े पहने और नगर की उसी बस्ती में जा पहुंचा । उसने वह झोपड़ी खोज ली, जहां तीरंदाज़ अन्द्रेई रहता था और वहां पहुंचकर दरवाज़े पर दस्तक दी । शाहज़ादी मारिया ने दरवाजा खोला । ज़ार ने अपना एक पांव दहलीज़ पर रखा, मगर दूसरा नीचे ही गड़ा–सा रह गया । वह ठगा, ठगा–सा, टकटकी बांधे उस परी को देखता रहा ।

शाहज़ादी मारिया ने कुछ देर इन्तज़ार किया और जब वह कुछ भी न बोला तो उसने उसको कन्धे से पकड़कर घुमा दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया ।

ज़ार के दिल को भारी धक्का लगा । "मैं अकेले जीवन क्यों बिताऊं ।" उसने सोचा । "मुझे ते ऐसी सुन्दर दुल्हन मिल सकती है । इसे तो रानी होना चाहिए, न कि तीरंदाज़ की बीवी ।"

जब वह वापस महल में पहुंचा तो शैतान ने उसके दिमाग़ को आ घेरा । उसने तीरंदाज़ की बीवी छीन लेने का इरादा बनाया । उसने अपने सलाहकार को बुलाया और कहा, "अन्द्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का कोई तरीक़ा सोचो । मैं उसकी बीवी से शादी करना चाहता हूं । अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हें इनाम में नगर, गांव और सोना दूंगा । अगर मदद नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगा ।"

सलाहकार बुरी तरह परेशान रहने लगा । तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का उसे कोई मार्ग नहीं सूझा और वह शराब पीकर अपना ग़म ग़लत करने के लिए एक शराबख़ाने में पहुंचा ।

उसी शराबख़ाने में मांग–मांगकर शराब पीनेवाला एक शराबी, फटा कफ़्तान पहने हुए उसके पास आया और बोला, "तुम किसलिए इस क़द्र परेशान हो, सलाहकार ?"

"जाओ यहां से, शराबी कीड़े !"

"मुझे दुतकारने के बजाय शराब का एक जाम पिला दो, तो मैं तुम्हें कुछ नेक सलाह दूं ।"

ज़ार के सलाहकार ने उसे शराब का एक गिलास दिया और उसे अपनी तकलीफ़ बतायी ।

"तीरंदाज़ अन्द्रेई बहुत सीधा–सादा आदमी है ।" शराबी ने कहा । "अगर उसकी पत्नी भी भोली–भाली हुई, तो उससे बहुत आसानी से छुटकारा पाया जा सकेगा । हमें कुछ ऐसी तरकीब सोचनी चाहिए, जो उसकी भी समझ पर पत्थर डाल दे । जाओ, जाकर ज़ार से कहो कि अन्द्रेई को दूसरी दुनिया में यह मालूम करने के लिए भेज दे कि उसके स्वर्गीय पिता–बूढ़े ज़ार–का वहां क्या हाल–चाल है । अन्द्रेई वहां गया तो बस, वहीं का होकर रह जायेगा ।"

ज़ार के सलाहकार ने उस शराबी कीड़े को धन्यवाद दिया और उलटे पांव ज़ार के पास भागा ।

"मैंने तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का एक रास्ता ढूंढ़ निकाला है, अन्नदाता !" उसने कहा ।

इसके बाद उसने ज़ार को अपनी तरकीब बतायी। ज़ार बेहद खुश हुआ और उसने उसी समय अन्द्रेई तीरंदाज़ को बुलवा भेजा।

"सुनो अन्द्रेई," उसने कहा, "तुमने बहुत वफ़ादारी से आजतक हमारी ख़िदमत की है। अब मैं तुम्हें एक और जरूरी काम सौंपता हूं। दूसरी दुनिया में जाकर यह मालूम करो कि मेरे पिताजी का वहां कैसा हाल–चाल है। अगर तुम नहीं जाओगे, तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

अन्द्रेई घर गया और परेशान होकर बैंच पर बैठ रहा। "तुम इतने उदास क्यों हो ?" शाहज़ादी मारिया ने पूछा, "क्या कोई मुसीबत सिर पर आ पड़ी है ?"

अन्द्रेई ने उसे ज़ार का आदेश सुनाया।

"यह भी कोई परेशानी की बात है !" शाहज़ादी मारिया ने कहा, "बहुत मामूली–सा काम है। असली काम तो अभी आगे आयेगा। जाकर सो जाओ, रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अगली सुबह अन्द्रेई ज्योंही उठा, शाहज़ादी मारिया ने उसे सुख़ारी से भरा थैला और सोने की अंगूठी दी।

"ज़ार के पास जाओ और उसे यह कहो कि वह तुम्हारे साथ अपने सलाहकार को भी दूसरी दुनिया में भेज दे, ताकि वह इस बात की गवाही दे सके कि तुम सचमुच ही दूसरी दुनिया में हो आये हो। अपने हमराही के साथ जाते हुए इस अंगूठी को अपने सामने फेंक देना। यह तुम्हें रास्ता दिखाती जायेगी।"

अन्द्रेई ने सुख़ारी से भरा थैला और अंगूठी लेकर अपनी बीवी को अलविदा

कही । वह सलाहकार को साथ लेने के लिए ज़ार के पास पहुंचा । ज़ार इन्कार न कर सका ।

इस तरह वे दोनों वहां से रवाना हुए । अन्द्रेई ने अंगूठी नीचे फेंकी और वह लुढ़कती हुई आगे-आगे जाने लगी । उस अंगूठी के पीछे-पीछे चलते हुए उसने खुले मैदान, दलदलें, झीलें और नदियां पार कीं । ज़ार का सलाहकार भी गिरता-पड़ता पीछे-पीछे चलता जाता था ।

जब वे चलते-चलते थक जाते, तो कुछ सुखारी खा लेते और फिर आगे चल देते ।

वे बहुत चले या थोड़ा चले, बहुत दूर गये या थोड़ी दूर, यह कहना मुश्किल है, मगर अन्त में वे एक घने जंगल में पहुंचे । वे एक घाटी में उतरे । वहां जाकर अंगूठी रुक गयी ।

अन्द्रेई और ज़ार के सलाहकार ने वहां बैठकर कुछ सुखारी खाई । तभी उन्होंने देखा कि बूढ़ा ज़ार जलाने की लकड़ी से भरा हुआ एक बड़ा-सा ठेला खींच रहा है । बोझ से उसकी कमर दोहरी हुई जा रही थी और वह बुरी तरह हांफ रहा था । दो शैतान, एक दाईं ओर से और दूसरा बाईं ओर से, उसे छड़ियों से मार-मारकर चला रहे थे ।

"देखो," अन्द्रेई ने कहा, "वह ज़ार का मृत पिता तो नहीं है ?"

"हां-हां वही तो है ।" सलाहकार ने कहा ।

"अरे शैतानो," अन्द्रेई ने चिल्लाकर कहा, "उस मृतक को कुछ समय के लिए छोड़ दो, मैं उससे कुछ बातें करना चाहता हूं ।"

"क्या तुम सोचते हो कि हमारे पास रुकने और इन्तज़ार करने का समय है ?" शैतानों ने जवाब दिया । "यह लकड़ी कौन ढोयेगा ? हम तो यह बोझ ढोने से रहे ।"

"मेरे साथ यह एक आदमी है। अगर तुम चाहो तो यह उसकी जगह ले सकता है।" अन्द्रेई ने कहा।

इस तरह शैतानों ने बूढ़े ज़ार को अलग करके उसकी जगह सलाहकार को ठेले में जोत दिया। तब उन्होंने उसे छड़ियां लगानी शुरू कीं, एक ने बाईं ओर से और दूसरे ने दाईं ओर से। सलाहकार दोहरा होकर पूरे ज़ोर से ठेला खींचने लगा।

अन्द्रेई ने बूढ़े ज़ार से पूछा कि उसकी ज़िन्दगी कैसी चल रही है।

"ओह, तीरंदाज अन्द्रेई," ज़ार ने कहा, "इस दुनिया में मेरा बहुत बुरा हाल है। मेरे बेटे को मेरी याद दिलाना और कहना कि लोगों से बुरा बर्ताव न करे, वरना यहां आने पर उसकी भी मेरी जैसी बुरी हालत होगी।"

उनकी बातचीत अभी ख़त्म हुई ही थी कि शैतान ख़ाली गाड़ी लिये वापस लौट आये। अन्द्रेई ने बूढ़े ज़ार से विदा ली। सलाहकार भी उसके साथ हो लिया और वे दोनों घर की ओर चल दिये।

कुछ अर्से बाद वे स्वदेश लौटे और महल में गये। ज़ार ने जब तीरंदाज़ को देखा तो गुस्से में आकर बौखला उठा, "वापस किस तरह लौट आये?"

"मैं दूसरी दुनिया में आपके पिता से मिल आया हूं। उन्होंने आपके लिए अपना प्यार भेजा है और कहा है कि अगर आप उनकी भांति दूसरी दुनिया में अपनी दुर्गति करवाना नहीं चाहते तो लोगों से बुरा बर्ताव करना छोड़ दें।"

"और तुम यह साबित कैसे करोगे कि तुम दूसरी दुनिया में हो आये हो और मेरे पिता से मिल आये हो?"

"इस बात के सबूत हैं वे निशान जो शैतानों की छड़ियों ने आपके सलाहकार की पीठ पर छोड़े हैं।" तीरंदाज ने कहा।

ज़ार के लिए यह काफ़ी बड़ा सबूत था । इसलिए उसे अन्द्रेई को छोड़ना ही पड़ा । इसके सिवा वह कर भी क्या सकता था ? तब उसने अपने सलाहकार से कहा, "अगर तुम इस तीरंदाज से छुटकारा पाने की कोई दूसरी तरकीब नहीं खोजोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा ।"

सलाहकार को इस बार पहले से भी अधिक परेशानी हुई । वह शराबख़ाने में जाकर एक मेज़ पर बैठ गया और उसने शराब लाने का आदेश दिया । तभी वह शराबी उसके पास आ पहुंचा और कहने लगा, "क्या बात है, तुम इतने परेशान क्यों हो, सलाहकार ? मुझे शराब का एक जाम पिलाओ । मैं तुम्हें कोई नेक राय दूंगा ।"

सलाहकार ने उसे शराब का जाम दिया और अपनी तकलीफ़ बतायी ।

"कोई फ़िक्र मत करो," शराबी ने कहा, "अभी जाकर ज़ार से कहो कि तीरंदाज़ को यह काम करने के लिए कहे—यह एक ऐसा काम है, जिसका करना तो दरकिनार, सोचना भी मुश्किल है । तीरंदाज को नौ–तिया–सत्ताईस देशों और दस–तिया–तीस राज्यों के पार जाकर लोरी गानेवाला बिल्ला लाने के लिए कहा जाये ।"

सलाहकार दौड़ता हुआ ज़ार के पास पहुंचा और उसे बताया कि वह किस तरह तीरंदाज़ से छुटकारा पा सकता है । ज़ार ने अन्द्रेई को बुलवाया । कहा, "अच्छा अन्द्रेई, तुमने मेरी एक ख़िदमत तो की, अब दूसरी भी करो । नौ–तिया–सत्ताईस देशों और दस–तिया–तीस राज्यों के पार जाकर लोरी गानेवाला बिल्ला लाओ । अगर नहीं लाये तो मैं अपनी तलवार से तुम्हारा सिर क़लम कर दूंगा ।"

अन्द्रेई मुंह लटकाये घर पहुंचा। उसने अपनी बीवी को बताया कि ज़ार ने उसे क्या नया हुक्म दिया है।

"कुछ फ़िक्र मत करो," शाहज़ादी मारिया ने कहा, "बहुत मामूली काम है। असली काम तो अभी आयेगा। जाकर सो जाओ। रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह जाकर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई सो गया तो शाहज़ादी मारिया एक लुहार के पास पहुंची। उसने उसे लोहे की तीन टोपियां, एक संडसी और तीन छड़ियां बनाने के लिए कहा–एक लोहे की, दूसरी तांबे की और तीसरी टीन की।

अगले दिन मारिया ने अन्द्रेई को तड़के ही जगाया।

"ये तीन टोपियां, एक संडसी और तीन छड़ियां हैं–नौ–तिया–सत्ताईस देशों और दस–तिया–तीस राज्यों के पार चले जाओ। वहां पहुंचने से एक कोस पहले तुम्हें बेहद नींद आयेगी–इसका कारण वह टोना होगा, जो लोरी गानेवाला बिल्ला तुम पर करेगा। मगर तुम सोना नहीं। अपने हाथों को जोड़ लेना, पैरों को घसीटना और अगर ज़रूरत हो तो ज़मीन पर लुढ़कने लगना। अगर तुम सो गये तो समझो कि जान गयी, वह बिल्ला तुम्हें मार डालेगा।"

शाहज़ादी मारिया ने उसे बताया कि वह क्या करे, कैसे करे और तब उसे उसके काम पर विदा किया।

कहानी सुनने–सुनाने में तो देर नहीं लगती, मगर काम करने में देर लगती है। अन्त में अन्द्रेई दस–तिया–तीस राज्य में पहुंचा। मंजिल से एक कोस इधर ही उसे नींद आने लगी। उसने लोहे की तीनों टोपियां सिर पर ओढ़ लीं, हाथों को जोड़ लिया, पैरों को रगड़ा और फिर ज़मीन पर लुढ़कता भी रहा।

जैसे–तैसे वह जागता रहा । अन्त में वह एक ऊंचे खम्भे के पास पहुंच गया ।

लोरी गानेवाले बिल्ले ने अन्द्रेई को देखा तो लगा गुर्राने और खम्भे से सीधा उसके सिर पर झपटा । उसने पहली टोपी और फिर दूसरी भी तोड़ डाली और फिर तीसरी तोड़ने ही वाला था जब अन्द्रेई ने उसे संडसी से पकड़–कर नीचे गिरा दिया और छड़ियों से उसकी मरम्मत करने लगा । पहले उसने उसे लोहे की छड़ी से पीटा जो टूट गयी ; फिर तांबे की छड़ी से खूब ख़बर ली तो वह भी टूट गयी । अन्त में वह टीन की छड़ी से उसे पीटने लगा ।

टीन की छड़ी मुड़ जाती, मगर टूटने का नाम न लेती, सिर्फ़ उसके शरीर के गिर्द घेरा डाल लेती । जिस समय अन्द्रेई उसे पीटता, तो बिल्ला उसे पादरियों और पादरियों की बेटियों के बारे में काल्पनिक कहानियां सुनाता जाता । मगर अन्द्रेई तो जैसे कान में तेल डाले हुए था । वह पूरी ताक़त से उसे पीटता रहा ।

लोरी गानेवाला बिल्ला अन्द्रेई की पिटाई को रोक न सका । और यह देखकर कि उसका छलपूर्ण टोना भी बेकार रहा, वह गिड़गिड़ाने और प्रार्थना करने लगा; "मुझे छोड़ दो, भले आदमी, तुम जो भी चाहोगे, मैं वही करूंगा ।"

"मेरे साथ चलने को तैयार हो ?"

"जहां भी कहो, चलूंगा ।"

अन्द्रेई बिल्ले को साथ लेकर घर की ओर चल दिया । अपने देश पहुंचकर बिल्ले को साथ लिये हुए वह ज़ार के महल में हाज़िर हुआ । उसने ज़ार

से कहा, "मैं आपका हुक्म बजा लाया हूं । यह लीजिये लोरी गानेवाला बिल्ला ।"

ज़ार को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ ।

"अच्छा, बिल्ले, मुझे अपनी ताक़त दिखाओ," उसने कहा ।

इस पर बिल्ले ने अपने नाखून तेज़ करते हुए ज़ार की ओर देखना शुरू किया । वह ज़ार की छाती चीरकर उसका धड़कता हुआ दिल बाहर निकालने के लिए तैयार हो गया ।

ज़ार की तो सिट्टीपिट्टी गुम हो गयी ।

"इसे शान्त करो, अन्द्रेई," उसने कहा ।

अन्द्रेई ने बिल्ले को शान्त करके पिंजरे में बन्द कर दिया तब वह शाहज़ादी मारिया के पास अपने घर गया । वे दोनों खुशी से रहते रहे । मगर ज़ार के लिए तो घड़ी–घड़ी, पल–पल भारी होने लगा । वह अपने दिल की रानी के बिना जिये तो कैसे ? एक दिन फिर उसने सलाहकार को बुलवा भेजा । कहा, "जैसे भी हो, अन्द्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने की कोई–न–कोई तरकीब निकालनी ही होगी । अगर ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा ।"

ज़ार का सलाहकार सीधा शराबख़ाने में पहुंचा । उसने उसी शराबी को ढूंढ़ा और उससे अपनी मुसीबत का हल बताने के लिए कहा । शराबी ने शराब का जाम पिया, मूंछों पर हाथ फेरा और कहा, "जाकर ज़ार से कहो कि अन्द्रेई तीरंदाज़ को 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे' की तलाश में भेज दे । यह काम अन्द्रेई कभी पूरा नहीं कर पायेगा और इसलिए कभी वापस नहीं आयेगा ।"

सलाहकार उलटे पांव ज़ार के पास दौड़ता हुआ गया और उसे सबकुछ ज्यों–का–त्यों जा बताया । ज़ार ने अन्द्रेई को बुलवा भेजा ।

"तुमने मेरे दो काम तो कर दिये, अब तीसरा भी कर दो," उसने कहा । "जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे । अगर तुम यह कर दोगे तो मैं बहुत अच्छा इनाम दूंगा, अगर नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा ।"

अन्द्रेई घर गया और बेंच पर बैठकर रोने लगा ।

"तुम रोते क्यों हो, मेरे प्यारे ?" शाहज़ादी मारिया ने पूछा । "इस बार क्या बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ी ?"

"ओह," उसने कहा, "तुम्हारा रूप मेरी तबाही का कारण बनेगा । ज़ार ने मुझे 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे'–यह काम पूरा करने का आदेश दिया है ।"

"अब यह वाक़ई मुश्किल काम है । पर ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम सो जाओ । रात की बात कभी सच नहीं होती । सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी ।"

आधी रात होने पर शाहज़ादी मारिया ने अपनी जादू–टोनों की किताब खोली । उसने उसे शुरू से अन्त तक बड़े ध्यान से पढ़ा । किताब एक तरफ़ फेंककर वह सिर हाथों में थामकर बैठ रही । किताब में इस काम को पूरा करने की कोई तरकीब नहीं थी । तब उसने ओसारे में जाकर अपना रूमाल हिलाया । सभी तरह के जानवर और परिन्दे झटपट वहां आ पहुंचे ।

"जंगल के जानवरो और आकाश के परिन्दो !" उसने कहा । "जानवरो, तुम हर जगह घूमते हो, परिन्दो, तुम हर जगह उड़ते–फिरते हो शायद तुम मुझे

यह बता सकते हो कि 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे'–यह काम कैसे पूरा किया जाये ?"

जानवरों और पक्षियों ने जबाव दिया, "नहीं, शाहज़ादी मारिया, हमें यह मालूम नहीं है ।"

शाहज़ादी मारिया ने फिर एक बार रूमाल हिलाया और जानवर तथा परिन्दे वहां से ऐसे ग़ायब हो गये जैसे वे वहां थे ही नहीं । रूमाल के तीसरी बार हिलाये जाने पर वहां दो देव प्रकट हुए ।

"आप क्या चाहती हैं ? आपकी क्या इच्छा है ?"

"मेरे वफ़ादार सेवको, मुझे महासागर के मध्य में ले चलो ।"

देव शाहज़ादी मारिया को उठाकर महासागर में जा पहुंचे और गहरे पानी के बिल्कुल बीच में खड़े हो गये । वहां वे दो ऊंचे स्तम्भों की भांति खड़े हुए शाहज़ादी को अपनी बांहों में थामे रहे । शाहज़ादी मारिया ने रूमाल हिलाया । सभी मछलियां और रेंगनेवाले समुद्री जीव–जन्तु उसके पास आ गये ।

"मछलियो और समुद्र के दूसरे तैरनेवाले जीव–जन्तुओं, तुम हर जगह तैरते–फिरते हो और सभी द्वीपों से परिचित हो । क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे'–यह काम कैसे पूरा किया जाये ?"

"नहीं, शाहज़ादी मारिया, हम तो इसके बारे में कुछ भी नहीं जानते ।"

शाहज़ादी मारिया निराश हो गयी । उसने देवों से कहा कि उसे वापस घर ले चलें । वे उसे वापस घर ले गये और उन्होंने उसे दरवाज़े पर छोड़ दिया ।

अगली सुबह शाहज़ादी मारिया ने अन्द्रेई को सफ़र के लिए तैयार किया। उसने उसे सूत का एक गोला और कसीदा किया हुआ एक तौलिया दिया।

"सूत के इस गोले को अपने सामने फेंक देना और जिधर यह जाये, तुम भी उधर चलते जाना।" उसने कहा, "और जहां भी तुम्हें हाथ–मुंह धोना पड़े तो मेरे दिये हुए तौलिये के सिवा कोई दूसरा तौलिया इस्तेमाल मत करना।"

अन्द्रेई ने शाहज़ादी मारिया को विदा किया, चारों दिशाओं को प्रणाम किया और नगर के दरवाज़ों से बाहर निकल गया। उसने सूत का गोला अपने सामने फेंका। वह जिधर लुढ़कता, अन्द्रेई भी उधर ही चलता जाता।

इस प्रकार वह बहुत–से राज्यों और अपरिचित देशों में से गुज़रा। गोला लुढ़कता गया, लुढ़कता गया और धागा खुलता गया। होते–होते वह मुर्ग़ी के सिर जैसा छोटा–सा रह गया और अन्त में इतना छोटा हो गया कि दिखाई भी मुश्किल से देता। अन्द्रेई एक जंगल में पहुंच चुका था, जहां उसने मुर्ग़ी के पांव पर खड़ी हुई एक छोटी–सी झोंपड़ी देखी।

"छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी, अपनी पीठ पेड़ों की तरफ़ और मुंह मेरी तरफ़ कर ले।" अन्द्रेई ने कहा।

झोंपड़ी ने मुंह उसकी तरफ़ कर लिया। वह भीतर गया। वहां उसने पके बालोंवाली एक बूढ़ी देखी, जो अपने सामने चरखी रखे, लिनेन कात रही थी।

"ओहो, रूसी खून! पहले कभी नहीं मिला, आज दरवाज़े पर खड़ा

है । कौन है ? कहां से आया है ? किधर जायेगा ? मैं तुम्हें ज़िन्दा भून डालूंगी, खा जाऊंगी और तेरी हड्डियों पर सवारी करूंगी ।"

"छिः छिः, बाबा–यगा, एक मुसाफ़िर को खाने की बात कर रही है," अन्द्रेई ने कहा । "मुसाफ़िर दुबला और हड़ीला है । पहले गुसलख़ाने में चूल्हा जलाकर पानी गर्म करो, मुझे नहाने और गर्म होने दो, फिर खा लेना ।"

तब उसने नहाने का पानी गर्म किया । अन्द्रेई नहाया और अच्छी तरह गर्म हुआ । इसके बाद जिस्म पोंछने के लिए उसने अपनी पत्नी का दिया हुआ तौलिया बाहर निकाला ।

"यह तौलिया तुम्हें कहां से मिला ?" बाबा–यगा ने पूछा । "इस पर जो कसीदे का काम है, वह तो मेरी बेटी का किया हुआ है ।"

"तुम्हारी बेटी मेरी बीवी है । यह तौलिया उसी ने मुझे दिया था ।"अन्द्रेई बोला ।

"ओहो, जमाई राजा, मैं तुम्हारा स्वागत करती हूं । मैं कैसे तुम्हारी आवभगत करूं ?" बाबा–यगा ने कहा ।

बाबा–यगा ने जल्दी–जल्दी हाथ–पांव हिलाये और सभी तरह के खाने और शराबें वग़ैरा मेज़ पर इकट्ठी कर दीं । अन्द्रेई ने कोई आपत्ति नहीं की और खाने में जुट गया । बाबा–यगा उसके पास बैठकर पूछने लगी कि उसने शाहज़ादी मारिया से किस तरह शादी की और यह कि क्या वे दोनों सुखी जीवन बिता रहे हैं । अन्द्रेई ने उसे सबकुछ बताया और यह भी कि किस तरह ज़ार ने उसे 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे'–यह कार्य पूरा करने का आदेश दिया है ।

"दादी मां ! काश, तुम मेरी कुछ मदद करो !" उसने कहा ।

"ओ मेरे प्यारे जमाई, अचम्भे की यह बात मैंने तो कभी नहीं सुनी । इसे तो केवल एक बूढ़ी मेंढकी जानती है जो तीन सौ वर्षों से दलदल में रह रही है । पर ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम सो जाओ ; रात की बात कभी सच नहीं होती । सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी ।"

अन्द्रेई सो गया और बाबा–यगा ने बर्च की टहनियों की दो झाड़ू लीं । वह उड़कर दलदल के पास पहुंची । वहां जाकर उसने ज़ोर से पुकारा, "बूढ़ी मां–मेंढकी, क्या तुम अभी भी जिन्दा हो ?"

"हां, जिन्दा हूं ।"

"तब फुदककर दलदल से बाहर आ जाओ ।"

बूढ़ी मेंढकी फुदककर दलदल से बाहर आयी तो बाबा–यगा ने कहा, "तुम जानती हो 'जाओ वहां–न जाने कहां'–यह जगह कहां है ?"

"जानती हूं ।"

"तो मेहरबानी करके मुझे उसका पता दो । मेरे दामाद को 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे'–यह काम पूरा करने की आज्ञा दी गयी है ।"

"मैं तो खुद ही उसे वहां ले जाती, मगर क्या करूं मैं बहुत बूढ़ी हूं और वह जगह काफी दूर है," मेंढकी ने कहा । "अपने दामाद से कहो कि वह मुझे ताज़ा दूध के मर्तबान में डालकर जलते दरिया तक ले चले । वहां मैं उसे रास्ता बता दूंगी ।"

बाबा–यगा बूढ़ी मेंढकी को साथ लेकर उड़ती हुई घर पहुंची । उसने एक मर्तबान में ताजा दूध दुहकर मेंढकी को उसमें डाल दिया । अगली सुबह उसने

अन्द्रेई को जगाया और कहा, "मेरे प्यारे जमाई, यह मर्तबान है और इसके अन्दर है मेंढकी," उसने कहा, "कपड़े पहनकर मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ और जलते दरिया के किनारे जा पहुंचो। घोड़े को वहीं छोड़कर तुम मर्तबान से मेंढकी को बाहर निकाल लेना। वह तुम्हें रास्ता बता देगी।"

अन्द्रेई ने कपड़े पहनकर मर्तबान लिया और बाबा–यगा के घोड़े पर सवार हो गया। चलते–चलते अन्त में वे जलते दरिया के किनारे जा पहुंचे। उस नदी को न तो कोई जानवर पार कर सकता था, न कोई पक्षी ही उड़कर दूसरी तरफ़ जा सकता था।

अन्द्रेई घोड़े से नीचे उतरा तो मेंढकी ने कहा, "वीर युवक, मुझे मर्तबान से बाहर निकाल लो। हमें यह दरिया पार करना होगा।"

अन्द्रेई ने मेंढकी को मर्तबान से बाहर निकालकर ज़मीन पर रख दिया।

"वीर युवक, अब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

"ओह, पर तुम तो इतनी छोटी हो, दादी मेंढकी ! मैं तुम्हें कुचल डालूंगा।"

"इसकी फ़िक्र मत करो। मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मुझे कसकर पकड़ लो।"

अन्द्रेई मेंढकी की पीठ पर बैठ गया। मेंढकी ने फूलना शुरू किया। वह फूलती गयी, फैलती गयी और अन्त में सूखी घास की एक गंजी के आकार की हो गयी।

"तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े हुए हो न ?" उसने पूछा।

"हां, दादी मां।"

बूढ़ी मेंढकी और फूलती गयी और इस बार वह सूखी घास के एक गंज जितनी ऊंची हो गयी ।

"तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े हुए हो न ?"

"हां, दादी मां ।"

वह और फूलती गयी और इस बार अन्धेरे जंगल से भी बड़े आकार की हो गयी । तब एक ही छलांग में वह जलता दरिया लांघ गयी । पार जाकर वह फिर अपने असली रूप में आ गयी ।

"इस रास्ते पर चलते जाओ, वीर युवक । कुछ दूर जाकर तुम्हें चबूतरे पर खड़ा हुआ लकड़ी का एक मकान दिखाई देगा, जो वास्तव में न तो घर है, न झोंपड़ा और न अन्न-भण्डार ही, बल्कि सभी का मिला-जुला रूप है । तुम भीतर जाकर अलावघर के पीछेवाले कोने में खड़े हो जाना । वहीं तुम पाओगे 'उसे-न जाने किसे ।"

अन्द्रेई उस मार्ग पर चलता गया । वहां उसने एक पुराना झोंपड़ा देखा, जोकि वास्तव में झोंपड़ा नहीं था । इसमें न तो कोई खिड़की थी, न कोई ओसारा । इसकी जगह इसके चारों ओर एक ऊंचा घेरा बना हुआ था । वह भीतर जाकर अलावघर के पीछेवाले कोने में छिप गया ।

थोड़ी देर बाद जंगल में भारी शोर और गड़गड़ाहट हुई । इसके फ़ौरन बाद वहां एक बौना आया, जिसकी दाढ़ी थी एक हाथ लम्बी । अन्दर आते ही वह ज़ोर से चिल्लाया , "ए भाई नऊम, मैं भूखा हूं ! "

उसके मुंह से शब्द निकलते ही वहां, न जाने कहां से, एक मेज़ हाज़िर हो गयी । उस मेज़ पर बीयर का एक ढोल, भुना हुआ बैल और एक छुरी दिखाई दी । एक हाथ लम्बी दाढ़ीवाला बौना, बैल के मांस के सामने बैठकर

उसे तेज़ छुरी से काटने, लहसुन में मिलाकर जल्दी-जल्दी खाने और सराहने लगा ।

वह सारे का सारा बैल खा गया और बीयर का ढोल पी गया ।

"ए, भाई नऊम, जूठन साफ़ कर डालो !"

और तभी वहां से मेज़ इस तरह ग़ायब हो गयी जैसे कभी वहां थी ही नहीं । हड्डियां, ढोल सभी कुछ ग़ायब हो गया ! अन्द्रेई ने बौने के जाने का इन्तज़ार किया । इसके बाद वह अलावघर के पीछे से बाहर आया । उसने हिम्मत करके आवाज लगाई, "भाई नऊम, मुझे कुछ खाने के लिए दो ।"

उसके ऐसा कहते ही न जाने कहां से एक मेज़ प्रकट हुई और उस पर सभी प्रकार के खाने, क़िस्म-क़िस्म की शराबें और अच्छी-अच्छी चीजें दिखाई दीं ।

अन्द्रेई मेज़ पर बैठ गया और उसने कहा, "बैठ जाओ, भाई नऊम, आओ हम दोनों एक साथ मिलकर खायें ।"

आदमी तो दिखाई न दिया, पर आवाज़ सुनाई दी, "धन्यवाद, भले आदमी । बहुत बरसों से मैं यहां ख़िदमत कर रहा हूं, मगर कभी रोटी का एक जला टुकड़ा तक भी खाकर नहीं देखा ; और तुम मुझे अपने साथ मेज़ पर बैठने को कह रहे हो ।"

अन्द्रई बेहद हैरान हुआ । वहां कोई दिखाई न दिया तो भी खाने की चीज़ें वहां से इस तरह ग़ायब हो गयीं मानो किसी ने झाड़ू दे दिया हो । तरह-तरह की बढ़िया शराबें अपने आप गिलासों में भर जातीं और गिलास फुदककर मेज़ पर पहुंच जाते ।

"भाई नऊम, मैं तुम्हें देखना चाहता हूं !" अन्द्रेई ने कहा ।

"नहीं, मुझे कोई भी नहीं देख सकता । तुम सुनते हो मुझे, या फिर 'उसे – न जाने किसे' ।"

"भाई नऊम, क्या तुम मेरी सेवा करना पसन्द करोगे ?"

"बेशक, पसन्द करूंगा । अगर कभी कोई भला आदमी था तो वह तुम हो ।"

जब वे खाना खत्म कर चुके तो अन्द्रेई ने कहा, "मेज़ हटाकर मेरे साथ चलो ।"

झोंपड़े से बाहर आकर अन्द्रेई ने घूमकर पूछा, "क्या तुम यहां हो, भाई नऊम ?"

"हां, चिन्ता नहीं करो । मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूंगा ।"

कुछ देर बाद अन्द्रेई जलते दरिया के पास पहुंचा, जहां मेंढकी उसका इन्तज़ार कर रही थी ।

"कहो, वीर युवक," मेंढकी ने पूछा, "क्या तुम मिले 'उसे–न जाने किसे' ?"

"हां, दादी मेंढकी ।"

"मेरी पीठ पर सवार हो जाओ ।"

अन्द्रेई उसकी पीठ पर चढ़ गया और मेंढकी ने फूलना शुरू किया । इसके बाद उसने छलांग लगायी और उसे जलते दरिया के पार ले गयी ।

उसने दादी मेंढकी को धन्यवाद दिया और अपनी राह चल दिया । वह थोड़ी दूर चलता फिर घूमकर देखता और पूछता, "तुम यहां हो, भाई नऊम ?"

"हां, चिन्ता मत करो । मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूंगा ।"

अन्द्रेई चलता गया, चलता गया । अन्त में वह बहुत थक गया और उसके पांव में छाले पड़ गये ।

"ओह, प्यारे," उसने कहा, "मैं बेहद थक गया हूं ।"

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?" भाई नऊम ने कहा, "मैं तुम्हें पलक झपकते घर पहुंचा देता ।"

उसी समय अन्द्रेई को लगा कि जैसे वह तेज़ हवा में उड़ रहा है । अब वह तेज़ी से पहाड़ों, जंगलों, शहरों और गांवों को लांघने लगा । जब वे गहरे समुद्र के ऊपर से उड़े जा रहे थे तो अन्द्रेई का दिल दहल गया ।

"भाई नऊम, मैं कुछ आराम करना चाहता हूं !" उसने कहा ।

हवा एकदम मन्द हो गयी और अन्द्रेई सागर की ओर नीचे जाने लगा । मगर जहां पहले केवल नीली लहरें थीं, वहां अब उसे एक द्वीप दिखाई देने लगा । उस द्वीप में सोने की छतवाला एक महल नज़र आया, जिसके सभी ओर एक सुन्दर बगीचा था । भाई नऊम ने अन्द्रेई से कहा, "खाओ, पियो, आराम करो और समुद्र पर अपनी नज़र रखो । सौदागरों के तीन जहाज़ इधर से आयेंगे । उनका स्वागत करना और उन्हें खाने के लिए बुला लेना । उनकी खूब अच्छी तरह ख़ातिर करना । सौदागरों के पास तीन अद्भुत चीजें हैं । मुझे उन चीजों से बदल लेना—घबराना नहीं । मैं तुम्हारे पास लौट आऊंगा ।"

कुछ समय बाद पश्चिम की ओर से तीन जहाज़ उधर आये । मुसाफ़िरों ने द्वीप, सोने की छतवाला महल और उसके चारों ओर सुन्दर बगीचा देखा ।

"यह भी क्या कमाल है ?" उन्होंने कहा, "बहुत बार हम इधर से गुज़रे हैं, मगर नीली लहरों के सिवा कभी कुछ दिखाई नहीं दिया । चलो, जहाज़ों को किनारे पर लगायें !"

तीनों जहाज़ों ने लंगर डाल दिये और तीनों सौदागर एक छोटी–सी नाव में बैठकर द्वीप की ओर चल दिये । अन्द्रेई तीरंदाज़ उनका स्वागत करने के लिए पहले से ही वहां उपस्थित था । बोला, "स्वागत, प्यारे मेहमानो ।"

सौदागर उस जगह को देखते जाते थे और बहुत ही हैरान होते जाते थे । उन्होंने देखा कि महल के ऊपर की छत आग की तरह दहक रही है । वृक्षों पर पक्षी चहचहा रहे हैं और रास्ते पर अद्भुत जानवर फुदकते फिर रहे हैं ।

"भले आदमी, हमें यह बताओ, यह दिमाग़ चकरा देनेवाला अजूबा यहां किसने बनाया है ?"

"यह सबकुछ मेरे सेवक, भाई नऊम ने एक ही रात में बनाया है ।"

अन्द्रेई मेहमानों को खाने के लिए महल में ले गया ।

"ए, भाई नऊम, हमें कुछ खाने–पीने को दो !"

अचानक ही वहां, न जाने कहां से, एक मेज़ आ गयी जिस पर इन्सान के मनपसन्द तरह–तरह के खाने और शराबें रखी हुई दिखाई दीं । सौदागर हक्के–बक्के रह गये ।

"भले आदमी, आओ, हम कुछ अदला–बदली कर लें," सौदागरों ने कहा, "हमें अपना नौकर नऊम दे दो और बदले में हमारा जो भी अजूबा तुम चाहो, ले सकते हो ।"

"मैं तैयार हूं, मगर दिखाओ तो तुम्हारे अजूबे हैं कौन–से ?"

एक सौदागर ने अपने कोट के नीचे से एक छड़ी निकाली । इस छड़ी को केवल इतना कहने की ज़रूरत होती है, "फ़लां की खूब मरम्मत करो !" और तभी छड़ी अपना काम शुरू कर देती है । वह हर आदमी की, वह चाहे कितना ही बलवान क्यों न हो, खूब मरम्मत कर सकती है ।

दूसरे सौदागर ने अपने चोग़े के नीचे से एक कुल्हाड़ा निकाला और उसका मुंह नीचे की ओर कर दिया । कुल्हाड़े ने काटने का काम शुरू कर दिया । ठक-ठक, एक जहाज़ तैयार होकर सामने आ गया । ठक-ठक, पालों तोपों और बहादुर मल्लाहों समेत दूसरा जहाज़ सामने आ उपस्थित हुआ । जहाज़ तैरने लगे, तोपों ने आग उगली और बहादुर मल्लाहों ने मालिक से आज्ञा देने को कहा ।

उसने कुल्हाड़े का मुंह ऊपर की तरफ़ किया और देखते-देखते जहाज़ ऐसे ग़ायब हो गये, जैसेकि वे वहां कभी थे ही नहीं ।

तीसरे सौदागर ने अपनी जेब से एक मुरली निकालकर बजायी । क्षणभर में वहां एक बड़ी सेना दिखाई देने लगी । इस सेना में पैदल और घुड़सवार सिपाही, बन्दूकें और तोपें, सभी कुछ था । सेना क़दम मिलाकर चलने लगी, बैंड बजने लगे, झण्डे लहराये और घुड़सवार घोड़े सरपट दौड़ाते हुए मालिक के सामने खड़े होकर आदेश की प्रतीक्षा करने लगे ।

तब सौदागर ने मुरली को दूसरी तरफ़ से बजाया और हर चीज़ ग़ायब हो गयी ।

"मुझे तुम्हारी ये अद्‌भुत चीज़ें पसन्द हैं," अन्द्रेई तीरंदाज़ ने कहा । "मगर मेरा अजूबा अधिक क़ीमती है । अगर तुम चाहो तो मैं अपने सेवक भाई नऊम को तुम तीनों की चीज़ों के बदले में दे सकता हूं ।"

"क्या तुम बहुत अधिक क़ीमत नहीं मांग रहे हो ?"

"बिल्कुल नहीं । इसकी या तो यही क़ीमत होगी या फिर कुछ भी नहीं ।"

सौदागरों ने इस पर विचार किया, "हमें इस छड़ी, कुल्हाड़े और मुरली का क्या करना है ? इनके बदले में भाई नऊम को ले लेना अधिक अच्छा होगा । तब हम रात–दिन, खा–पीकर मस्त पड़े रहेंगे । और सो भी बिना एक उंगली हिलाये ।"

बस, सौदागरों ने अन्द्रेई को छड़ी, मुरली और कुल्हाड़ा दे दिया । इसके बाद वे चिल्लाये, "ए भाई नऊम, तुम हमारे साथ चलो ! क्या तुम ईमानदारी से हमारी सेवा करोगे ?"

"क्यों नहीं ।" एक आवाज़ सुनाई दी, "मुझे तो सेवा ही करनी है, तुम्हारी या किसी दूसरे की ।"

इसके बाद सौदागर अपने जहाज़ों में जा बैठे । वे खा–पीकर शोर मचाते रहे ।

वे तबतक पीते रहे जबतक कि नशे में चूर नहीं हो गये और इसके बाद जहां बैठे थे, वहीं सो गये ।

तीरंदाज़ अन्द्रेई महल में अकेला बैठा हुआ दुखी होता रहा । उसने सोचा, "न जाने, वह मेरा वफ़ादार सेवक, भाई नऊम कहां गया ?"

"मैं यहां हूं । तुम क्या चाहते हो ?"

अन्द्रेई खिल उठा । बोला, "क्या अब मेरे लिए अपनी मातृभूमि में, अपनी प्यारी पत्नी के पास लौट जाना ठीक नहीं होगा ? मुझे घर ले चलो, भाई नऊम !"

एक बार फिर से उसने अपने को हवा में उड़ते पाया । हवा के झोंकों में उड़ता हुआ वह अपने देश में पहुंच गया ।

इधर सौदागर जब जागे तो उन्होंने थोड़ी शराब पीनी चाही ।

"ए भाई नऊम !" वे चिल्लाये, "हमें कुछ खाने-पीने को दो, जल्दी करो !"

मगर वे व्यर्थ ही पुकारते और गला फाड़ते रहे । उन्होंने घूमकर देखा तो द्वीप ग़ायब था । जहां द्वीप था, वहां अब केवल नीली लहरें लहरा रही थीं । सौदागरों को बहुत दुख हुआ, "ओह ! कितना बुरा आदमी था वह ! हमें इस तरह धोखा दे गया !" उन्होंने कहा । मगर वे कुछ नहीं कर सकते थे । इसलिए उन्होंने अपने जहाज़ों के पाल खोले और अपनी मंज़िल की तरफ़ चल दिये ।

इतनी देर में अन्द्रेई तीरंदाज़ उड़ता हुआ घर पहुंचा और अपनी झोंपड़ी के पास, नीचे जा उतरा । मगर जहां पहले झोंपड़ी थी, वहां अब जली हुई चिमनी के सिवा उसे कुछ भी दिखाई न दिया । वह मुंह लटकाये हुए नीले समुद्र-तट के किसी एकान्त स्थान पर पहुंचा । वहां बैठकर वह मन-ही-मन अफ़सोस कर रहा था कि तभी, न जाने कहां से, एक भूरी कबूतरी वहां उड़ती हुई आयी । वह ज़मीन से टकरायी और टकराकर उसकी प्यारी बीवी शाहज़ादी मारिया बन गयी ।

उन्होंने एक-दूसरे का आलिंगन किया और पूछना शुरू किया कि अलग होने के बाद उनके साथ क्या-क्या बीती ।

"जब से तुम गये हो, मैं जंगलों और कुंजों में कबूतरी बनकर उड़ती रही हूं," शाहज़ादी मारिया ने कहा, "ज़ार ने मुझे तीन बार बुलवाया, मगर मुझे

वहां न पाकर उसने हमारे छोटे–से मकान को आग लगवा दी ।"

"भाई नऊम, अगर हम नीले समुद्र के तट पर वीराने में एक महल खड़ा कर लें तो कैसा रहे ?"

"बहुत अच्छा रहेगा, अभी पलक झपकते तैयार हो जायेगा ।"

बिल्कुल वैसा ही हुआ । इससे पहले कि वे घूमकर देख पाते, महल तैयार हो गया । यह ज़ार के महल से कहीं अधिक सुन्दर था । यह महल बड़े और हरे बगीचे के बीच था, जिसमें तरह–तरह के पक्षी, वृक्षों पर बैठे गा रहे थे तथा सभी प्रकार के अद्भुत जानवर पगडंडियों पर घूम रहे थे ।

तीरंदाज अन्द्रेई और शाहज़ादी मारिया महल के भीतर गये । वे खिड़की के नज़दीक बैठकर एक–दूसरे की तरफ़ प्यार से देखते हुए बातचीत करने लगे । इसी तरह निश्चिन्त मन से उन्होंने एक, फिर दूसरा और तीसरा दिन बिताया ।

जब ज़ार शिकार खेलता हुआ वहां आया तो उसने नीले सागर के तट पर, जहां पहले कुछ भी न था, एक महल खड़ा पाया ।

"किस शैतान ने मेरी ज़मीन पर बिना मेरी अनुमति के यह महल बनाया है ?" उसने कहा ।

उसने पता करने के लिए अपने दूत भेजे । उन्होंने लौटकर ज़ार को बताया कि तीरंदाज अन्द्रेई ने वह महल बनाया है और उसमें अपनी युवा पत्नी शाहज़ादी मारिया के साथ रह रहा है ।

ज़ार पहले से भी अधिक गुस्से में आया । उसने अपने दूतों को यह पता करने के लिए भेजा कि क्या अन्द्रेई 'वहां–न जाने कहां' गया और 'उसे–न जाने किसे' लाया ?

दूत वहां पहुंचे और उन्होंने वापस आकर बतलाया, "हां, अन्द्रेई तीरंदाज़ 'वहां–न जाने कहां' गया और 'उसे–न जाने किसे' ले आया ।"

अब तो ज़ार गुस्से से पागल हो उठा । उसने अपनी सेना को समुद्र–तट पर जाकर महल नीचे गिरा देने का हुक्म दिया । उसने यह भी कहा कि तीरंदाज़ अन्द्रेई तथा शाहज़ादी मारिया को बेरहमी से मौत के घाट उतारा जाये ।

अन्द्रेई ने देखा कि उसके महल की तरफ़ बड़ी भारी सेना बढ़ती आ रही है । उसने अपना कुल्हाड़ा बाहर निकाला और उसका मुंह नीचे की ओर कर दिया । कुल्हाड़े ने अपना काम करना शुरू किया । ठक–ठक, और समुद्र में एक जहाज़ खड़ा दिखाई देने लगा । ठक–ठक, इसके बाद दूसरा जहाज़ सामने आया । कुल्हाड़े ने सौ बार वैसा ही किया और समुद्र में सौ जहाज़ तैरते दिखाई देने लगे ।

अन्द्रेई ने अपनी मुरली निकालकर बजायी । बहुत–से पैदल और घुड़सवार सैनिकों की एक सेना बन्दूकें और लहराते हुए झण्डे लिये सामने आ गयी । सेना के सरदार घोड़े दौड़ाते हुए उसके पास पहुंचे और आदेश की प्रतीक्षा करने लगे । अन्द्रेई ने उन्हें लड़ाई शुरू करने का हुक्म दिया । अब क्या था । बैंड बजने लगे, ढोल ढमढमाने लगे और दस्ते आगे बढ़ने लगे । पैदल सिपाहियों ने ज़ार की सेना के छक्के छुड़ा दिये और घुड़सवार घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए सैनिकों को क़ैदी बनाने लगे । सौ जहाज़ों के बेड़े ने अपनी तोपों का मुंह ज़ार के शहर की ओर मोड़ दिया ।

ज़ार ने जब अपनी फ़ौज भागती देखी तो उन्हें डटे रहने की आज्ञा देने के लिए खुद आगे आया । फिर क्या था ! अन्द्रेई ने अपनी छड़ी बाहर निकाली । बोला, "अच्छा तो छड़ी, ज़ार की कसकर मरम्मत कर ।"

छड़ी कलाबाजियां खाती हुई ज़ार की तरफ़ बढ़ी । ज़ार के पास पहुंचकर उसने उसके माथे पर चोट की और वह उसी समय, दम तोड़कर दूसरी दुनिया में पहुंच गया ।

लड़ाई बन्द हो गयी । लोग नगर से बाहर आकर इकट्ठे हो गये और उन्होंने अन्द्रेई तीरंदाज़ से ज़ार बनने की प्रार्थना की ।

अन्द्रेई को भला इसमें क्या एतराज़ हो सकता था ! उसने एक शानदार दावत की और वह शाहज़ादी मारिया के साथ बहुत बरसों तक उस देश पर राज्य करता रहा । ❑



५/ किसान की चतुराई

एक बुढ़िया थी। उसके दो बेटे थे। एक बेटा मर गया। दूसरा दूर किसी देश को चला गया। उसको गये हुए तीन दिन भी नहीं हुए थे कि एक सिपाही बुढ़िया के पास आकर बोला, "मुझे रात भर यहीं रहने दो, दादी!"

"अन्दर आ जाओ, भाई। कहां से आ रहे हो?" बुढ़िया ने पूछा।

वह बोला, "मैं तो दूसरी दुनिया का रहनेवाला हूं।"

"सच! मेरे लड़के को मरे अभी कुछ ही दिन हुए हैं। उससे वहां तुम्हारी भेंट हुई क्या?"

"जरूर, वह और मैं तो एक ही कमरे में रहते थे ।"

"अच्छा !" बुढ़िया की आंखें चमक उठीं ।

"अब तो दादी, वह दूसरी दुनिया में सारस पालता है ।"

"हाय, बेचारा ! यह तो बहुत मुश्किल काम होगा ?"

"और नहीं तो क्या ? आप तो जानती हैं कि सारसों की कैसी आदत होती है । वे हमेशा कांटेदार झाड़ियों की तरफ़ भागते हैं ।"

"तब तो उसके कपड़े और जूते भी फट गये होंगे ?"

"अरे, दादी, उसके चिथड़े देखकर तो तुम्हें बहुत ही दुख होगा ।"

"भाई, मेरे पास कोई चालीस गज़ कपड़ा है और कोई दस रूबल हैं । यह सब तुम मेरे बेटे के लिए ले जाओगे ?"

"खुशी से ले जाऊंगा ।"

बुढ़िया ने कपड़े और रूबल दे दिये । लेकर वह चला गया ।

कुछ दिन बाद बुढ़िया का बेटा सफ़र से लौट आया ।

मां ने कहा, "बेटा, तुम नहीं थे । दूसरी दुनिया से एक आदमी यहां आया था । उसने मुझे तुम्हारे स्वर्गीय भाई का पूरा हाल बताया । दूसरी दुनिया में वह तुम्हारे भाई के साथ एक ही कमरे में रहता था । मैंने उसके हाथ तुम्हारे भाई के लिए थोड़ा-सा कपड़ा और दस रूबल भेज दिये हैं ।"

"अच्छा, ऐसा हुआ !" उसके बेटे ने कहा । "मैं जाता हूं, देखूंगा कि इस लम्बी-चौड़ी दुनिया में कोई तुमसे भी बड़ा मूर्ख है क्या ? कोई मिल जायेगा तो लौट आऊंगा, नहीं तो वहीं रह जाऊंगा ।"

वह मुड़ा और चला गया ।

चलते–चलते एक गांव में पहुंचा और ज़मींदार के खलियान के पास रुक गया । वहां एक सूअरी अपने बच्चों के साथ घूम रही थी । किसान सूअरी के सामने घुटने टेककर बैठ गया और धरती से माथा लगाकर सूअरी को नमस्कार करने लगा । ज़मींदारिन ने खिड़की से यह देखा तो अपनी नौकरानी से बोली, "जाओ, ज़रा उस किसान से पूछो कि वह धरती पर माथा क्यों टेक रहा है ?"

नौकरानी बाहर आकर बोली, "ओ, किसान, तुम घुटनों के बल बैठे हुए हमारी सूअरी के सामने माथा क्यों टेक रहे हो ?"

किसान ने कहा, "जाकर अपनी मालकिन से कह दे कि उनकी सूअरी चितकबरी है और इसलिए वह मेरी घरवाली की बहन है । मैं उसे अपने लड़के की शादी में बुलाने के लिए आया हूं । शादी कल होनी है । ज़रा अपनी मालकिन से पूछकर आ कि क्या वह अपनी सूअरी को मेरे यहां जाने देंगी ? उसे वहां ब्याह का सारा काम–काज संभालना होगा और उसकी बच्चियों को दुलहिन की सहेलियां बनना पड़ेगा ।"

ज़मींदारिन ने यह सब सुना तो वह अपनी नौकरानी से बोली, "यह कैसा मूर्ख आदमी है, जो सूअरी को और सो भी उसके बच्चों के साथ शादी में बुलाने आया है ! अच्छा है, लोगों को उस पर हँसने दो । सूअरी को मेरा रोएंदार कोट पहना दो और गाड़ी में घोड़ों की जोड़ी जुड़वा दो । ये सब खूब ठाठ के साथ गाड़ी में बैठकर शादी के लिए जायेंगे ।"

गाड़ी में घोड़े जोत दिये गए । उस पर सूअरी और बच्चों को बिठाकर किसान गाड़ी में बैठ गया और घर की तरफ़ रवाना हो गया ।

जब ज़मींदार शिकार खेलकर घर लौटा तो उसकी स्त्री झटपट उसके पास गई। मारे हंसी के ज़मींदारिन का बुरा हाल था। बोली, "कैसे मज़े की बात थी, तुम नहीं देख पाये! तुम्हारे साथ मिलकर हंसते तो और मज़ा आ जाता। यहां एक किसान आया था और हमारी सूअरी के सामने बैठा माथा टेक रहा था। बोला, 'आपकी सूअरी है चितकबरी और इसलिए वह है मेरी घरवाली की बहन।' इसलिए, उसने हमसे कहा कि सूअरी को उसके लड़के की शादी में जाने की इजाज़त दे दी जाय, जिससे वह ब्याह का सारा काम-काज संभाल सके और सूअरी की बच्चियां दुलहिन की सहेलियां बन सकें।"

"मैं जानता हूं, तुमने क्या किया होगा," ज़मींदार बोला, "तुमने बच्चों सहित सूअरी उसे दे दी होगी। है न?"

"हां, जी, मैंने सूअरी को अपना रोएंदार कोट पहनाया और इसके अलावा घोड़ों की जोड़ी के साथ एक गाड़ी भी किसान को दे दी।"

"वह किसान कहां का रहनेवाला था?" ज़मींदार ने पूछा।

ज़मीदारिन ने हैरानी के साथ कहा, "यह तो मुझे नहीं मालूम।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि वह किसान मूर्ख नहीं था, बल्कि तुम मूर्ख हो।"

ज़मींदार अपनी स्त्री से बहुत नाराज़ था कि उसने अपने को इस तरह मूर्ख बन जाने दिया। वह फौरन घर से बाहर निकला, घोड़े पर सवार हुआ और किसान का पीछा करने के लिए चल पड़ा। किसान ने अपने पीछे घोड़े की टाप सुनी तो घोड़ा-गाड़ी को एक घने जंगल में छिपा दिया और अपनी टोपी ज़मीन पर रखकर रास्ते के किनारे बैठ गया।

"अरे, ओ दाढ़ीवाले," ज़मींदार ने चिल्लाकर उससे कहा, "क्या इधर कहीं पर तुमने घोड़ा–गाड़ी के साथ एक किसान को देखा है, जिसकी गाड़ी में एक सूअरी और उसके बच्चे बैठे हैं ?"

"हां, मैंने देखा है । कई घण्टे हुए वह इधर से गुज़रा था ।"

"वह किस तरफ़ को जा रहा था ? मुझे उसे पकड़ना है ।" ज़मींदार ने उत्सुकता से कहा ।

"उसे पकड़ना तो बड़ा मुश्किल काम है । अब तो वह बहुत दूर निकल गया होगा । हो सकता है, आप रास्ता भूल जायें । इस इलाके को आप अच्छी तरह जानते तो हैं न ?"

"सुनो, अच्छा यह होगा कि तुम जाओ और उस किसान को पकड़कर ले आओ ।"

"नहीं, जी, यह तो मैं नहीं कर सकता । मेरी टोपी के नीचे एक बाज़ बैठा हुआ है । "

"तो क्या हुआ ! तुम्हारे पीछे मैं तुम्हारे बाज़ की रखवाली करूंगा ।"

"मगर इसका ख़्याल रखियेगा कि वह टोपी के नीचे से निकल न जाये । बहुत क़ीमती बाज़ है । मुझसे खो गया तो मेरा मालिक मेरा जीना दूभर कर देगा ।"

"क्या क़ीमत है इस बाज़ की ?"

"पूरे तीन सौ रूबल ।"

"अच्छा, तो घबराओ नहीं । मुझसे बाज़ खो गया तो मैं तुम्हें उसके दाम दे दूंगा !"

"कोरी बातों से रोटी नहीं चुपड़ी जाती ।"

"अरे, तुम तो मुझ पर विश्वास ही नहीं करते ! अच्छा, यह लो तीन सौ रूबल । अब तो हो गया तुमको भरोसा ?"

किसान रुपये लेकर ज़मींदार के घोड़े पर सवार होकर नौ–दो–ग्यारह हो गया । देखते–देखते वह घने जंगलों में गायब हो गया ।

इधर ज़मींदार ख़ाली टोपी की रखवाली करने लगा । इन्तज़ार करते–करते उसे घण्टों बीत गये । सूरज छिपने का समय हो गया ; लेकिन किसान का कोई अता–पता न था ।

"देखूं, इस टोपी के नीचे कोई बाज़ है भी या नहीं । अगर है तो वह ज़रूर लौटेगा । अगर नहीं है तो फिर इन्तज़ार करना बेकार है ।"

उसने टोपी उठाकर देखी । वहां बाज़–वाज़ कुछ नहीं था ।

"बदमाश, बेईमान ! मालूम पड़ता है, यह वही किसान था, जिसने मेरी बीवी को धोखा दिया था ।"

खिन्न होकर उसने ज़मीन पर थूका और फिर पैदल ही लड़खड़ाता–सा अपने घर के लिए रवाना हो गया । मगर उसके घर पहुंचने के घण्टों पहले ही किसान अपने घर पहुंच गया था । "मां" किसान ने घर पहुंचकर बुढ़िया से कहा, "हमलोग साथ–साथ ही रहेंगे । दुनिया में तू ही सबसे ज़्यादा मूर्ख नहीं है । देख, मैं तीन घोड़े, एक गाड़ी, तीन सौ रूबल और बच्चों सहित एक सूअरी ले आया हूं ..... और सब मुफ़्त में !" ❑



६। नेकी फले, बदी छले

एक बार एक बूढ़ा अपनी दूसरी बीवी के साथ रहता था। दोनों की एक-एक बेटी थी। एक बेटी बूढ़े की थी, एक उसकी बीवी की।

हर कोई जानता है कि सौतेली माताएं कैसी होती हैं। चाहे तुम काम बिगाड़ो, चाहे संवारो, पिटाई तो तुम्हारी होगी ही। अपनी बेटी चाहे जो भी करे, उसकी सदा सराहना की जाती है, उसे हमेशा शाबाशी दी जाती है।

बूढ़े की बेटी रोज पौ फटने के पहले उठती । वह पशुओं की देख–रेख करती, आग जलाने के लिए लकड़ी और पानी लाती, चूल्हा जलाती और फ़र्श पर झाड़ू लगाती । फिर भी उसकी सौतेली मां हर काम में दोष ढूंढ़ निकालती, बात–बात पर बिगड़ती और उसे दिन–भर डांटती ।

तेज़ हवा एक बार ज़ोर से सायं–सायं करती है और फिर शान्त हो जाती है । पर अगर किसी बुढ़िया की जबान एक बार चालू हो जाती है तो जल्द ही बंद होने का नाम नहीं लेती । सौतेली मां ने सौतेली बेटी से छुटकारा पाने का निश्चय कर लिया ।

"बुड्ढे, इसे यहां से ले जाओ," उसने अपने पति से कहा, "यह मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती । इसे जंगल में ले जाओ और जाड़े–पाले में ठिठुरकर मरने को छोड़ आओ ।"

बूढ़ा बहुत दुखी हुआ, रोया, मगर वह कुछ नहीं कर सकता था । जैसे बीवी नचाती थी, उसे नाचना पड़ता था । इसलिए उसने अपने घोड़े जोते और बेटी को पुकारा, "आओ, मेरी प्यारी बेटी, गाड़ी में बैठ जाओ ।"

बूढ़ा बाप बे–मां की लड़की को जंगल में ले गया और वहां एक बड़े देवदार के पेड़ के नीचे बर्फ़ पर पटककर, गाड़ी आगे भगा ले गया ।

बेहद सर्दी थी । लड़की देवदार के नीचे बैठी हुई ठिठुर रही थी । अचानक उसने हिम–देवता को एक से दूसरे पेड़ पर फांदते और वृक्षों की शाखाओं के बीच चटक–पटख की आवाज करते सुना । पलक झपकते में वह उस पेड़ के ऊपर आ पहुंचा, जिसके नीचे वह लड़की बैठी हुई थी ।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की ?" उसने ऊपर से पुकार कर पूछा ।

"नहीं, हिम–देवता !"

हिम–देवता और नीचे आ गया और वह पहले से कहीं अधिक चटख–पटख करने लगा।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की ?" उसने फिर पूछा, "क्या तुम गर्म हो, मेरी सुन्दर बिटिया ?"

लड़की बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी, मगर उसने कहा, "हां, मैं बहुत गर्म हूं, हिम–देवता !"

हिम–देवता और भी नीचे आ गया। उसकी चटख–पटख की आवाज़ पहले से कहीं अधिक ऊंची हो गयी।

"लड़की, क्या तुम गर्म हो ?" उसने पूछा, "क्या तुम गर्म हो, सुन्दर बिटिया ? क्या तुम गर्म हो, मेरी माधुरी ?"

ठंड से लड़की के अंग जमे जा रहे थे और वह बड़ी मुश्किल से ज़बान हिला पा रही थी, फिर भी उसने कहा, "मैं गर्म हूं, प्यारे हिमराज !"

हिम–देवता को लड़की पर रहम आ गया और उसने उसे पोस्तीन और रोयेंदार कंबल से लपेट दिया।

उधर बुढ़िया मातमी दावत की तैयारी कर रही थी और अपनी सौतेली बेटी की याद में पूरियां पका रही थी। उसने अपने पति से कहा, "अरे ओ बूढ़े खूसट, जंगल में जाओ और अपनी बेटी को दफ़नाने के लिए वापस ले आओ !"

बूढ़ा जंगल में गया और वहां, उसी जगह पर, उसने अपनी बेटी को पहले से अधिक खुश बैठे पाया।

लड़की के गालों पर सुर्खी थी। वह बढ़िया फ़र का पोस्तीन पहने थी

और सोने–चांदी के जेवरों से लदी थी। उसके पीछे उपहारों से भरी हुई एक बड़ी टोकरी रखी थी।

बूढ़े की खुशी का कोई ठिकाना न था। उसने बेटी को बर्फ़–गाड़ी में बिठाया, बड़ी टोकरी उसके पीछे रखी और घर की ओर चल दिया।

घर पर बुढ़िया अभी भी पूरियां तल रही थी। जब उसने अचानक मेज़ के नीचे से अपने छोटे–से कुत्ते को यह कहते सुना–

"भौं–भौं–भौं

लदकर सोने–चांदी से बूढ़े की बिटिया आयेगी

और बनेगी वह सुकुमारी, दुल्हन प्यारी–प्यारी।

किन्तु रहेगी बुढ़िया की बेटी तो सदा कुमारी।"

बुढ़िया ने कुत्ते की ओर एक पूरी फेंकी और कहा, "तू ग़लत कह रहा है कुत्ते! तुझे कहना चाहिए :

"बुढ़िया की बेटी के होंगे बड़े चाहनेवाले

और किसी के दिल की वह बन जायेगी पट–रानी,

मरी–खपी बूढ़े की बेटी, किस्सा ख़त्म कहानी।"

कुत्ते ने पूरी खा ली, फिर भी वही बात कही।

बुढ़िया ने कुत्ते की ओर कई पूरियां फेंकीं और उसे मारा भी, मगर कुत्ते ने बार–बार वही बात दोहरायी।

अचानक फाटक चरमराया, दरवाज़ा खुला और बूढ़े की बेटी ने भीतर प्रवेश किया। वह सोने–चांदी के ज़ेवरों से लदी चमचम कर रही थी। उसके पीछे उसका बाप क़ीमती उपहारों से भरी एक बड़ी टोकरी लिये हुए अन्दर आया। बुढ़िया ने यह सब देखा तो जल–भुनकर कोयला हो गयी।

"अरे ओ बूढ़े ! घोड़ों को गाड़ी में जोतो !" उसने कहा । "मेरी बेटी को जंगल में ले जाओ और उसी जगह छोड़ आओ, जहां अपनी बेटी को छोड़ आये थे ।"

बूढ़े ने बुढ़िया की बेटी को गाड़ी में बिठाया, जंगल में उसी जगह पर ले गया और ऊंचे देवदार पेड़ के नीचे बर्फ़ के ढेर पर पटककर लौट आया ।

बुढ़िया की बेटी वहां बैठी थी । इतनी अधिक सर्दी थी कि उसके दांत बज रहे थे ।

हिम–देवता एक के बाद दूसरे पेड़ पर कूदता–फांदता और शाखाओं के बीच चटक–पटख की आवाज़ करता हुआ और बीच–बीच में बुढ़िया की बेटी पर नज़र डालता हुआ पूछता, "तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की ?"

लड़की जवाब देती, "हाय–हाय, मुझे बेहद ठंड लग रही है ! इस तरह चटख–पटख मत करो, हिम–देवता !"

हिम–देवता और नीचे आ गया और अधिक जोर से चटख–पटख करने लगा ।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की ?" उसने पुकार कर पूछा, "क्या तुम गर्म हो, सुन्दरी ?"

"अरे नहीं," उसने कहा, "मैं तो जमी जा रही हूं । जाओ यहां से, हिम–देवता ।"

मगर हिम–देवता और नीचे आ गया तथा पहले से भी कहीं ऊंची आवाज़ में चटख–पटख करने लगा । उसकी सांस भी पहले से अधिक ठंडी हो गयी थी ।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की ? क्या तुम गर्म हो, सुन्दरी ?"

"हाय, मैं तो बिल्कुल जम गई हूं ! जाओ, भाग जाओ यहां से, दुष्ट हिम-देव !"

इसपर हिमराज को इतना गुस्सा आया कि उसने अपनी सारी शक्ति से बुढ़िया की बेटी को अपनी जकड़ में ले लिया और उसे ठंड से मार डाला ।

सुबह हुई ही थी कि बूढ़ी ने अपने पति से कहा, "जल्दी करो, घोड़े जोतो, बूढ़े ! जाओ, सोने-चांदी से चमचम करती मेरी बेटी को घर ले आओ ।"

बूढ़ा आदमी गाड़ी लेकर गया । तब मेज़ के नीचे से छोटा कुत्ता भौंका :

"भौं-भौं-भौं

बहुत जल्द बूढ़े की बेटी, दुल्हन भी बन जायेगी ।

ठिठुर मरी बुढ़िया की बेटी, कभी न अब उठ पायेगी ।"

बुढ़िया ने कुत्ते की तरफ़ समोसे का एक टुकड़ा फेंका और कहा, "तू गलत कहता है । कह :

'बुढ़िया की बेटी लद कर आयेगी सोने-चांदी से ।"

लेकिन कुत्ते ने वही पहली बात दोहरायी ।

तभी फाटक चरमराया और बुढ़िया अपनी बेटी से मिलने के लिए दौड़ी । उसने चटाई हटायी तो उसके नीचे अपनी बेटी की लाश पायी ।

बुढ़िया ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी, मगर अब हो ही क्या सकता था !

चिड़िया तो चुग खेत चुकी थीं । ❑



७/ सिपाही जीता, मौत हारी

एक सिपाही था। पच्चीस बरस तक फ़ौज में काम करने के बाद उसे नौकरी से अलग कर दिया गया।

"तुम्हारी नौकरी की मियाद पूरी हो गयी। अब तुम आज़ाद हो। जहां चाहो जा सकते हो।"

बेचारा सिपाही चल दिया। वह सोचता था, "मैंने पच्चीस बरस तक ज़ार की सेवा की और इसके लिए मुझे शलजम की पच्चीस गांठें भी नहीं मिलीं। बदले में मुझे क्या मिला ? बस, रास्ते के लिए सिर्फ़ तीन सुखारी। अब मैं क्या करूं ? कहां जाऊं ? मेरे लिए सिर छिपाने को भी कौन-सी जगह है ? ख़ैर, अब घर चलूं। देखूं, मेरे मां-बाप अभी जीवित हैं या मर गये। मर गये होंगे तो कम-से-कम थोड़ी देर उनकी क़ब्र के पास बैठ आऊंगा।"

सिपाही घर की ओर रवाना हो गया। वह चलता गया, चलता गया। दो सुखारी उसने खा लीं। बस एक बच रही, हालांकि अभी उसे बहुत दूर जाना था।

रास्ते में उसे एक भिखारी मिला। बोला, "दादा, इस कंगले और बूढ़े को भी कुछ देते जाओ।"

सिपाही ने अपनी आख़िरी सुख़ारी निकालकर बूढ़े भिखारी को दे दी। उसने सोचा, "मैं तो ठहरा सिपाही-जैसे-तैसे समय काट लूंगा। मगर यह बेचारा कंगला बुड्ढा क्या करेगा ?"

उसने अपने पाइप में तम्बाकू भरा, एक दम लगाया और आगे चल दिया। वह चलता जाता था और दम लगाता जाता था।

चलता गया, चलता गया। चलते-चलते उसे सड़क के किनारे एक झील दिखाई दी। उसमें कुछ जंगली बतखें किनारे के बिल्कुल नज़दीक तैर रही थीं।

सिपाही दबे पांव उनके पास पहुंचा और मौक़ा देखकर उसने तीन बतख़ें उड़ा लीं ।

"चलो, खाने का तो कुछ इन्तज़ाम हो गया ।"

उसने फिर अपनी राह पकड़ ली । थोड़ी ही दूर चलने के बाद वह एक शहर में पहुंच गया । उसने एक सराय तलाश की और तीनों बतख़ें भटियारे को देकर कहा, "ये तीन बतख़ें हैं । एक मेरे लिए भून दो । दूसरी तुम्हारी मेहनत के बदले में है । तीसरी के बदले में खाने के साथ मुझे थोड़ी-सी शराब दे देना ।"

जबतक सिपाही ने अपना झोला वग़ैरा खोला और थोड़ा आराम किया, तबतक खाना तैयार हो गया ।

उसने ख़ूब धीरे-धीरे, मज़ा ले-लेकर, खाया और फिर भटियारे से पूछा, "गली के उस पार वह नया मकान किसका है ?"

"शहर के सबसे धनी सौदागर ने यह मकान अपने रहने के लिए बनवाया था । मगर वह लाख चाहते हुए भी उसमें रह नहीं सकता ।" भटियारे ने जवाब दिया ।

"क्यों ?"

"उस मकान में भूतों का डेरा है । समझ लो कि वह घर भूतों और प्रेतों से भरा हुआ है । रात को वे चीख़ते-चिल्लाते हैं, नाचते हैं और बड़ा शोर मचाते हैं । अंधेरा हो जाने के बाद मकान के पास जाते हुए भी लोगों को डर लगता है ।"

सिपाही ने भटियारे से पूछा, "उस सौदागर से कहां भेंट हो सकती है ? मैं उससे मिलकर दो बातें करना चाहता हूं । हो सकता है, उसकी कुछ मदद कर सकूं ।"

खाना खाने के बाद वह थोड़ी देर सोने के लिए लेट गया। जब शाम हो गयी तो वह उठकर बाहर चला गया। सौदागर से मिला। उसने पूछा, "क्या चाहते हो ?"

"मैं राहगीर हूं। आपके नये मकान में रात बिताने की इजाज़त चाहता हूं। मैंने सुना है कि वह एकदम ख़ाली पड़ा है।" सिपाही ने कहा।

"तुम पागल तो नहीं हो गये हो ?" सौदागर बोला, "ज़िन्दगी से ऊब तो नहीं गये हो ? जाओ, कोई और मकान देखो। शहर में बहुत–से मकान हैं। मेरे नये मकान में तो, जबसे मैंने उसे बनवाया है, तभी से भूतों का डेरा है, और कोई उन्हें वहां से नहीं निकाल पाता।"

"हो सकता है, मैं ही उन्हें निकाल दूं, कौन जानता है ? मुमकिन है, ये भूत–प्रेत एक बूढ़े सिपाही का कहना मान जायें !"

सौदागर ने कहा, "भैया, बहुत–से दूसरे बहादुर लोग भी इसकी कोशिश करके देख चुके हैं, मगर सब बेकार ! कुछ नहीं हो सकता। पिछले साल एक मुसाफ़िर आया था। तुम्हारी तरह उसने भी भूतों को मकान से भगाने की कोशिश की थी। उसने तो एक रात उसी मकान में रहने तक की हिम्मत की थी। लेकिन सुबह को सिर्फ़ उसकी हड्डियां ही मिलीं। भूतों ने उसे दूसरी दुनिया में पहुंचा दिया।"

"रूसी सिपाही को न तो आग जला सकती है और न पानी गला सकता है। मैंने पच्चीस बरस तक फ़ौज में नौकरी की है, तरह–तरह की लड़ाइयों और चढ़ाइयों में हिस्सा लिया है और मैं अभी तक अपना क़िस्सा सुनाने के लिए ज़िन्दा हूं। इसलिए मैं कहता हूं कि इन भूतों से मैं निपट लूंगा।"

"अच्छा भाई, तुम जानो," सौदागर ने कहा, "तुम नहीं डरते तो

जाओ । अगर तुमने भूतों को मकान से भगा दिया तो मैं तुम्हें ढेरों इनाम दूंगा ।"

"इस समय तो तुम मुझे कुछ मोमबत्तियां, थोड़े–से भुने हुए अख़रोट और एक भुना हुआ बड़ा–सा शलजम दिलवा दो ।"

"जाओ, दुकान से जो चाहो, ले लो ।"

सिपाही दुकान के अन्दर गया । वहां से उसने एक दर्जन मोमबत्तियां और डेढ़ सेर भुने हुए अख़रोट उठा लिये । फिर वह सौदागर के रसोईघर में गया और वहां उसे जो सबसे बड़ा भुना हुआ शलजम मिला, उसे लेकर नये मकान की ओर रवाना हो गया ।

रात के बारह बजते ही वहां यकायक हड़बड़ी शुरू हो गयी । दरवाज़े फटाफट बन्द होने लगे । फ़र्श के तख़्ते चरमराने लगे और ऐसा जान पड़ा, मानो बहुत–से पागल एक साथ नाच रहे हों । उनकी चीख़–पुकार और चिल्लाहट ऐसी भयंकर थी कि मुर्दे भी सुनते तो घबराकर क़ब्रों से बाहर आ जाते । पूरे मकान में मानो भूचाल आ गया ।

लेकिन सिपाही इस तरह शान्त बैठा हुआ अख़रोट खा रहा था और पाइप के कश लगा रहा था, जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो ।

यकायक दरवाज़ा खुला । एक भूत ने कमरे के अन्दर झांककर सिपाही को देखा और देखते ही चिल्लाया, "यहां तो एक आदमी बैठा है ! आ जाओ, दोस्तो, आज तो हमारी दावत का सामान तैयार है !"

सारे भूत–प्रेत धम–धम करते उसी कमरे में घुस आये, जिसमें सिपाही बैठा था । वे दरवाज़े के पास भीड़ लगाये खड़े थे, सिपाही को देख रहे थे और

एक–दूसरे को कोहनी मार–मारकर कह रहे थे, "हम इसकी हड्डी–हड्डी नोच डालेंगे ! कच्चा चबा जायेंगे !"

"बहुत बढ़–चढ़कर बातें न करो !" सिपाही ने कहा। "मैं तुम जैसे बहुतों से निपट चुका हूं और एक–एक के मिज़ाज दुरुस्त कर चुका हूं। ज़रा सोच–संभलकर खाना मुझे ! कहीं ऐसा न हो कि गले में अटक जाऊं !"

इस पर सबसे बड़ा भूत, जो शायद भूतों का सरदार था, दूसरों को धक्का देकर रास्ते से हटाता हुआ आगे आया और बोला, "तो आओ फिर, हमारी–तुम्हारी ताक़त का इम्तहान हो जाये।"

"हां, हो जाये इम्तहान !" सिपाही ने कहा, "बोलो, क्या तुम लोगों में से कोई भी पत्थर को मुट्ठी में दबाकर उसका सत निकाल सकता है ?"

भूतों के सरदार ने हुक्म दिया कि गली से एक पत्थर लाया जाये। एक भूत फ़ौरन भागकर गया और एक पत्थर ले आया। उसनें सिपाही को पत्थर देकर कहा, "देखें, कैसे दबाते हो !"

"पहले तुममें से कोई दबाये। मेरी बारी बाद में आवेगी।"

भूतों के सरदार ने लपककर पत्थर हाथ में ले लिया और फिर उसे इतने ज़ोर से दबाया कि वह चूर–चूर हो गया।

"देखा तुमने !"

सिपाही ने अपने झोले में से शलजम निकाला। बोला, "देखो, मेरा पत्थर तुम्हारे पत्थर से बड़ा है।"

और उसने शलजम को दबाकर उसका रस निकाल दिया।

"देखा तुमने !"

सारे भूत देखकर दंग रह गये। कुछ देर बाद जब उनके मुंह से बोल फूटा तो कहने लगे, "यह तुम खा क्या रहे हो ?"

"अख़रोट। मगर तुममें से कोई ऐसा नहीं है, जो मेरे अख़रोटों को तोड़ सके।"

यह कहकर उसने अपनी बन्दूक़ की एक गोली भूतों के सरदार को पकड़ा दी। बोला, "लो, ज़रा सिपाही के अख़रोट को चबाकर तो देखो !"

भूतों के सरदार ने फ़ौरन गोली मुंह में डाल ली। वह उसे चबाता रहा, चबाता रहा, यहां तककि गोली चपटी हो गयी, मगर वह टूटी नहीं। उधर सिपाही एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा अख़रोट मुंह में डाल-कर कड़ा-कड़ तोड़ता जा रहा था।

सब भूत निगाहें नीची किये हुए खड़े थे और बड़ी परेशानी और घबराहट के साथ सिपाही की तरफ़ देख रहे थे।

"मैंने सुना है कि तुम लोग खूब अच्छे जादू के खेल दिखाते हो," सिपाही ने कहा, "तुम छोटे से बड़े और बड़े से छोटे बन जाते हो और बारीक-से-बारीक सूराख़ में से निकल जाते हो।"

"हां-हां, यह हम कर सकते हैं," सारे भूत चिल्लाये।

"तो आओ, ज़रा मेरे इस झोले में तो सब-के-सब घुसकर दिखाओ !"

सब भूत झोले पर टूट पड़े और जल्दी-जल्दी एक-दूसरे को धक्का देते हुए झोले में घुस गये। एक मिनट के अन्दर पूरा मकान ख़ाली हो गया। अब सारे भूत झोले में बन्द थे।

सिपाही ने झोले का मुंह बन्द करके उसके फ़ीते कसकर बांध दिये और ऊपर से बकसुआ लगा दिया।

"अब मैं चैन से सो सकता हूं ।" उसने कहा ।

वह सिपाहियों के ढंग से अपने बड़े कोट को आधा बिछाकर, आधा ओढ़कर लेट गया और लेटते ही उसे नींद आ गयी ।

अगले रोज़ सौदागर ने अपनी दुकान के नौकरों से कहा, "जाओ, ज़रा जाकर देखो कि वह सिपाही ज़िन्दा है या मर गया । मर गया हो तो उसकी लाश उठा लाना ।"

नौकर आये तो उन्होंने देखा कि सिपाही अपने पाइप के कश लगाता हुआ कमरों में टहल रहा है ।

"नमस्कार, सिपाहीजी । हमें तो उम्मीद न थी कि तुम ज़िन्दा मिलोगे । हम तो तुम्हारा मरा शरीर उठाने के लिए यह बक्सा भी ले आये थे ।"

सिपाही ने हंसकर जवाब दिया, "मुझे मारना बच्चों का खेल नहीं है । लो, इस झोले को उठाकर किसी लुहारख़ाने तक ले चलो । लुहारख़ाना यहां से बहुत दूर है क्या ?"

"नहीं, दूर नहीं है, " दुकान के नौकरों ने जवाब दिया ।

वे लोग झोले को उठाकर लुहारख़ाने तक ले गये । सिपाही ने लुहारों से कहा, "अच्छा, इस झोले को ज़रा अहरन पर रखकर ज़ोर से हथौड़ा तो चलाओ !"

लुहार और उसके शागिर्दों ने झोले को अहरन पर रखकर धड़ाधड़ घन और हथौड़ा चलाना शूरू कर दिया ।

उन भूतों का क्या हाल हुआ होगा, यह तो आप ख़ुद ही सोच सकते हैं ।

"हम पर दया करो, भैया, हमारी जान बख़्श दो !" वे एक आवाज़ में चिल्लाये ।

लेकिन लुहार अपना हथौड़ा चलाता ही रहा । सिपाही उनको बढ़ावा देता जाता था, "खूब पीटो, खूब मरम्मत करो उनकी । आज इन्हें मालूम हो जाना चाहिए कि दूसरों को कैसे तंग किया जाता है ।"

"अब हम जबतक ज़िन्दा रहेंगे, कभी उस मकान में पैर नहीं रखेंगे" भूत चिल्लाये, "इतना ही नहीं, दूसरे सब भूतों से भी कह देंगे कि इस शहर से हमेशा दूर रहें । अगर हमारी जान बख़्श दोगे तो हम तुम्हें बहुत–सा इनाम देंगे ।"

"अब अक़्ल आयी ठिकाने ! लगता है, अब किसी रूसी सिपाही से टक्कर लेने की हिम्मत नहीं करोगे !"

उसने लुहारों से कहा कि हथौड़ा चलाना बन्द कर दें । फिर उसने झोले के फ़ीते ढीले किये और सारे भूतों को एक–एक करके बाहर निकल जाने दिया । बस अकेला भूतों का सरदार उसमें रह गया ।

"इसको तब छोडूंगा जब तुम इनाम ले आओगे ।" सिपाही ने कहा ।

उसके पाइप का तम्बाकू अभी ख़त्म नहीं हुआ था कि एक भूत एक पुरानी झोली हाथ में लटकाये हुए आता दिखाई दिया ।

"लो, यह रहा तुम्हारा इनाम ।" भूत ने पास आकर कहा ।

सिपाही ने झोली हाथ में ली, पर वह बहुत हल्की मालूम हुई । उसने उसे खोलकर अन्दर देखा तो उसे बिल्कुल खाली पाया ।

"मुझे बेवकूफ़ बनाने की कोशिश कर रहे हो ?" सिपाही ने भूत पर बिगड़ते हुए कहा । "ठहरो ज़रा, तुम्हारे सरदार के सिर पर जब दो हथौड़े और पड़ेंगे तो सारी अक़्ल ठिकाने आ जायेगी ।"

यह सुनकर भूतों का सरदार झोले के अन्दर से चिल्लाया, "मुझे और मत पिटवाओ । मेरी बात सुनो । यह झोली देखने में जैसी लगती है, असल में वैसी है नहीं । यह बड़ी अद्‌भुत है । हर इच्छा पूरी करनेवाली है । दुनिया में ऐसी दूसरी झोली नहीं मिलेगी । मन में किसी भी चीज़ की इच्छा करके झोली के अन्दर देखो, फौरन तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी । मान लो, तुम कोई चिड़िया पकड़ना चाहते हो या कोई और चीज़ हासिल करना चाहते हो । बस, झोली को हिलाकर कहो, 'चल अन्दर !' और वह चीज़ झोली के अन्दर पहुंच जायेगी ।"

"अच्छा, अभी देख लेते हैं कि तुम सच बोल रहे हो या झूठ ।" सिपाही ने कहा ।

इसके बाद उसने अपने मन में इच्छा की–'मैं चाहता हूं कि मेरी झोली में शराब की तीन बड़ी बोतलें आ जायें ।' उसका यह सोचना था कि झोली भारी हो गयी । उसने उसका मुंह खोला तो क्या देखता है कि सचमुच शराब की तीन बड़ी बोतलें झोली में आ गयी हैं । उसने तीनों बोतलें लुहारों को दे दीं ।

लुहारख़ाने से बाहर निकलकर सिपाही ने इधर–उधर देखा । छत पर एक गौरैया बैठी हुई थी । उसने अपनी झोली हिलाकर कहा, "चल अन्दर !"

उसके मुंह से ये शब्द निकलते ही गौरैया उसकी झोली में आ गयी ।

सिपाही लुहारख़ाने में लौट आया और बोला, "तुमने सच कहा था । मुझे धोखा नहीं दिया । ऐसी झोली एक बूढ़े सिपाही के काफ़ी काम आ सकती है ।" उसने अपने झोले को खोलकर भूतों के सरदार को भी छोड़ दिया ।

भूतों का सरदार और सारे भूत पल भर में ग़ायब हो गये । सिपाही ने अपना झोला और झोली उठायी, लुहारों से विदा ली और सौदागर से मिलने के लिए चल पड़ा ।

वहां पहुंचकर उसने सौदागर से कहा, "अब आप मज़े से नये मकान में रह सकते हैं, आपको कोई तंग नहीं करेगा ।"

सौदागर टकटकी लगाकर सिपाही को देख रहा था । उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था ।

"सचमुच, रूसी सिपाही को न तो आग जला सकती है, न पानी गला सकता है । मुझे बताओ तो कि तुमने भूतों को कैसे हराया और जीते-जागते कैसे बचकर निकल आये ?"

सिपाही ने जो कुछ हुआ था, सब कह सुनाया । दुकान के नौकरों ने उसकी बात की गवाही दी । सौदागर ने सोचा, "मकान में रहना शुरू करने से पहले एक-दो दिन देख लेना चाहिए कि सचमुच वहां शान्ति हो गयी है या नहीं और भूत-प्रेत फिर तो नहीं लौट आये ।"

उस रोज़ शाम को सौदागर ने दूकान के सब नौकरों को सिपाही के साथ नए मकान में रहने को कहा ।

रात भर वे सब चैन से नये मकान में सोये और अगले रोज़ सुबह भले-चंगे और खुशी-खुशी सौदागर के पास लौट आये ।

तीसरी रात सौदागर ने भी हिम्मत करके उनके साथ रात बितायी । फिर क्या था ! बड़े चैन से समय गुज़रा । सबलोग शान्ति के साथ सोये ।

सौदागर से विदा लेकर सिपाही ने अपनी अद्‌भूत झोली और ख़ाली झोला कंधे पर लटकाया और वहां से चल पड़ा ।

आख़िर वह अपने इलाक़े में पहुंच गया । एक पहाड़ी के ऊपर से उसने अपना गांव देखा और उसका दिल ख़ुशी से नाच उठा । वह अपने घर पहुंचा । सीढ़ियां चढ़कर उसने दरवाज़ा खटखटाया । एक बहुत ही बूढ़ी स्त्री ने दरवाजा खोला । सिपाही बड़े प्यार से उसके गले लगा । बुढ़िया ने अपने बेटे को पहचान लिया । मारे ख़ुशी के वह पागल हो उठी । बोली, "अरे, तुम्हारा बाप तो हर घड़ी तुम्हारी ही बात किया करता था । मगर अफ़सोस कि वह यह दिन देखने के लिए ज़िन्दा नहीं रहा । उसे मरे पांच साल हो गये ।" कहते–कहते बुढ़िया चुप हो गयी । सिपाही ने उसको ढाढ़स बंधाते हुए कहा, "अब तुम्हें किसी बात की फ़िक्र नहीं रहेगी । तुम्हारी ज़रूरतों और तुम्हारे आराम का अब मैं ख्याल करूंगा ।"

उसने अपनी झोली खोली और मन में इच्छा की कि वह खाने की तरह–तरह की स्वादिष्ट चीज़ों से भर जाये । झोली भर गई ।

खाने की सभी चीज़ों को झोली से निकालकर उसने मेज़ पर चुन दिया और मां से कहा, "लो, जी भरकर खाओ !"

अगले दिन उसने अपनी झोली खोली और इच्छा की कि वह चांदी से भर जाये । फिर उसने एक नया घर तैयार किया । गाय, घोड़ा और घर की ज़रूरत का सारा सामान ख़रीदा । फिर उसने एक लड़की से विवाह किया । और अपनी खेती की देखभाल करने लगा । उसकी बूढ़ी मां अपने पोतों को पालती थी और अपने बेटे के सौभाग्य पर फूली न समाती थी ।

इसी तरह कोई छः या सात बरस बीत गये । एक रोज़ सिपाही बीमार

पड़ गया । तीन दिन तक वह बिस्तर पर पड़ा रहा । न कुछ खा सका, न पी सका । उसकी हांलत बराबर बिगड़ती ही गयी । तीसरे दिन उसने देखा कि उसके बिस्तर के पास खड़ी हुई मौत अपनी दरांती को तेज़ कर रही है और रह–रहकर उसकी तरफ़ देखती जाती है ।

"चलो, दादा," मौत ने कहा, "मैं तुम्हें लेने आयी हूं और अपने साथ ले चलूंगी ।"

"ऐसी जल्दी क्या है ?" सिपाही ने कहा, "मुझे कुछ साल तो और ज़िन्दा रहने दो । अभी तो मुझे अपने बच्चों को पालना–पोसना है, अपने बेटे–बेटियों की ब्याह–शादी करनी है, फिर अपने पोतों को देखना और कुछ दिन उनके साथ रहना है । उसके बाद तुम मुझे लिवा ले जा सकती हो । पर अभी तो मैं नहीं जा सकता ।"

"नहीं, दादा, अब तो मैं तुम्हें कुछ साल तो क्या, कुछ समय भी नहीं छोड़ सकती ।"

सिपाही ने मौत की बहुत खुशामद की, पर वह नहीं मानी । वह चुप हो गया । लेकिन उसने हार नहीं मानी । किसी तरह उसने वह अद्‌भुत झोली अपने तकिये के नीचे से निकाल ली और फिर उसे हिलाते हुए वह चिल्लाया, "चल अन्दर !"

उसके मुंह से ये शब्द निकलते ही मौत उसमें आ गई और सिपाही अच्छा होने लगा । उसने झोली को कसकर बंद कर दिया । उसकी तबीयत बिल्कुल अच्छी हो गयी, यहां तककि उसे भूख भी लग आयी । वह बिस्तर से उठकर खड़ा हो गया । उसने मौत से कहा, "हुं, तू मेरी प्रार्थना पर कान देने को तैयार नहीं थी । ख़बरदार ! जो अब किसी रूसी सिपाही से टक्कर लेने की हिम्मत की !"

"अब तुम मेरे साथ क्या करनेवाले हो ?" झोली के अन्दर से आवाज़ आयी ।

सिपाही ने जवाब दिया, "मैं तुझे कीचड़ भरे दलदल में डुबो देनेवाला हूं और तू जबतक ज़िन्दा रहेगी, वहां से कभी निकल नहीं पायेगी ।"

"मुझे छोड़ दो, दादा । मैं तुम्हें तीन बरस की ज़िन्दगी और दिये देती हूं ।"

"नहीं नहीं, अब मैं तुम्हें हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा ।"

"मुझे छोड़ दो दादा," मौत गिड़गिड़ायी । "मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें तीस बरस और ज़िन्दा रहने दूंगी ।"

"अच्छा," सिपाही ने कहा, "मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकता हूं । तुम वादा करो कि अगले तीस साल तक किसी की भी जान नहीं लोगी ।"

"ऐसा वादा मैं नहीं कर सकती," मौत ने कहा । "किसी की भी जान नहीं लूंगी तो फिर मैं ज़िन्दा कैसे रहूंगी ।"

"तीस बरस तक जड़ें, पेड़ के ठूंठ और पत्थर खाकर ज़िन्दा रहना ।"

अपनी जान बचाने का कोई रास्ता न देखकर मौत ने कहा, "अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी । अगले तीस साल तक मैं किसी की जान नहीं लूंगी और जड़ें, पेड़ के ठूंठ और जंगलों के पत्थर खाकर ज़िन्दा रहूंगी । तुम मुझे छोड़ दो !"

सिपाही मौत को गांव के बाहर ले गया और वहां पहुंचकर उसने झोली का मुंह खोल दिया ।

मौत अपनी दरांती लेकर जंगलों में भाग गयी, जहां वह जड़ों, पेड़ों के

ठूंठ और पत्थरों की तलाश करने लगी, ताकि उन्हें खाकर ज़िन्दा रह सके। अब और चारा ही क्या था!

लोग बड़े खुश थे। न कभी कोई बीमार पड़ता था, न कभी कोई मरता था।

तीस बरस तक यही हालत रही।

इस बीच सिपाही के बच्चे बड़े हो गये। उसके बेटे-बेटियों का ब्याह हो गया। उसका परिवार बहुत बढ़ गया। परिवार के एक आदमी को मदद की ज़रूरत होती तो दूसरे को सलाह-मशविरे की। तीसरे को डांट-फटकार कर ठीक करना ज़रूरी होता, और ज़िंदगी में पैर जमाने के लिए तो हरेक को ही कुछ सहारे की ज़रूरत होती।

सिपाही को कुछ-न-कुछ काम बराबर लगा रहता था। वह चौबीसों घण्टे खुश रहता था।

लेकिन एक रोज़ मौत फिर आ धमकी।

"आज तीस बरस पूरे हो जायेंगे। तुम्हारी मियाद ख़त्म हो गयी है। दादा, उठो। मैं तुम्हें लेने के लिए आ गयी हूं।"

सिपाही ने इस बार बहस नहीं की।

"मैं ठहरा सिपाही! हुक्म मिलते ही चल पड़ने को तैयार रहता हूं। अगर मेरी मियाद पूरी हो गयी है तो जाओ, एक ताबूत (बक्सा) ले आओ।"

मौत बलूत की लकड़ी का एक ताबूत ले आयी, जिसके गिर्द लोहे के घेरे लगे हुए थे। उसने ढक्कन खोलकर कहा, "चलो अन्दर, दादा!"

सिपाही गुस्से से लाल–पीला हो उठा । बोला, "तुझे यह भी नहीं मालूम कि ये सब काम ढंग से कैसे किये जाते हैं ? एक बूढ़ा सिपाही ऐसी हड़बड़ी में कोई काम नहीं कर सकता । फ़ौज में जब कभी सार्जेण्ट–मेजर हमें कोई नया काम सिखाना चाहता था, तो पहले खुद उसे करके हमें दिखाता था और तब उसका हुक्म होने पर हम वही काम करते थे । तुझे भी यही करना चाहिए । पहले मुझे खुद करके दिखा, फिर हुक्म दे ।"

मौत खुद ताबूत में लेट गयी । बोली, "देखो, दादा, तुम्हें इस तरह लेट जाना है–टांगें फैली रहनी चाहिए और हाथ छाती पर रख लेने चाहिए ।"

सिपाही इसी घड़ी का तो इन्तजार कर रहा था । उसने झट से ढक्कन बन्द कर दिया और लोहे के घेरे जड़ दिये ।

"अब तू ही लेटी रह वहां," उसने कहा । "मैं तो यहां खूब आराम से हूं ।"

वह ताबूत को एक गाड़ी में लादकर नदी के एक बहुत ढालू किनारे पर ले गया और वहां से उसने ताबूत को नदी में फेंक दिया । नदी की धारा ताबूत को बहाकर समुद्र में ले गयी और बरसों तक मौत समुद्र में ही डूबती–उतराती रही ।

लोग फिर बड़ी खुशी के साथ ज़िन्दगी बिताने लगे । वे सिपाही की तारीफ़ करते कभी न अघाते थे । सिपाही खुद भी और बूढ़ा नहीं हुआ । उसने अपने पोते–पोतियों की शादियां कीं और अपने पड़पोतों को अपने पास बैठाकर सीख दी । सुबह से शाम तक वह सदा घर पर और खेत में कुछ–न–कुछ करता रहता ।

एक रोज़ समुद्र में बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया। लहरों ने ताबूत को उठाकर एक पहाड़ी की चोटी पर पटक दिया। ताबूत चकनाचूर हो गया। मौत रेंगती-रेंगती किनारे पर पहुंची। देखने में वह ज़िन्दा से ज्यादा मुर्दा लगती थी। इतनी कमज़ोर हो गयी थी कि हवा के झोंके से ही हिल-हिल जाती थी।

कुछ देर तक वह समुद्र के किनारे पड़ी रही। जब जरा जान-में-जान आयी तो वह लड़खड़ाती हुई उस गांव में पहुंची, जहां वह सिपाही रहता था और उसके अहाते में जाकर छिप गयी। वह सोच रही थी कि सिपाही बाहर निकेलगा तो वह झट से उस पर टूट पड़ेगी।

उधर सिपाही खेत में बुआई करने के लिए बाहर जाने को तैयार हो रहा था। उसने एक ख़ाली बोरा लिया और खलिहान में से बीज निकालने के लिए चल पड़ा। वह खलिहान में घुसा ही था कि मौत, जहां दुबकी हुई थी, वहां से निकलकर सामने आ खड़ी हुई।

"इस बार तुम मुझसे नहीं बच सकते," उसने दांत निकालकर कहा।

सिपाही ने देखा कि इस बार वह बुरी तरह फंस गया है। उसने अपने मन में सोचा, "अच्छा कोई बात नहीं, जो होना है सो होगा ही, अगर इससे पूरी तरह से छुटकारा नहीं पा सकता तो कम-से-कम उसे डरा तो सकता ही हूं।"

बस, फिर क्या था! अपने चोग़े के नीचे से ख़ाली बोरा निकालकर वह ज़ोर से चिल्लाया, "अच्छा, तो तू फिर झोली में बन्द होना चाहती है, क्यों? उस कीचड़ भरे दलदल का फिर स्वाद चखना चाहती है?"

मौत ने सिपाही के हाथ में ख़ाली बोरा देखा तो वह उसे वही अद्भुत

झोली समझी और ऐसी डरी कि फ़ौरन वहां से सिर पर पैर रखकर भाग खड़ी हुई ।

मौत को अब केवल यही चिन्ता थी कि कहीं वह सिपाही को फिर न दिखाई दे जाये । "उसने मुझे देख लिया तो फिर उस कीचड़ भरे दलदल से मुझे कोई नहीं बचा सकता ।" वह मन-ही-मन सोच रही थी ।

उसी दिन से अब मौत को जब किसी की जान लेनी होती है, तो वह सदा छिपकर आती है ।

सिपाही उसके बाद से हमेशा आनंद में रहा । लोग कहते हैं कि वह अब भी ज़िन्दा है और खूब मौज उड़ा रहा है । ❑



८/ मालिक को चकमा

किसी ज़माने में एक किसान और उसकी घरवाली रहते थे । बीवी को गप हांकने का बहुत शौक था । कोई सी भी बात उसके पेट में पचती नहीं थी । ज्योंही वह कोई बात सुनती, सारे गांव में उसका ढिंढोरा पीट आती ।

एक दिन किसान जंगल में गया। उसने भेड़िये फंसाने के लिए गड्ढा खोदना शुरू किया। संयोग से उसे वहां दबा हुआ ख़ज़ाना मिला।

किसान ने अपने आपसे कहा, "अब मैं क्या करूं ? जैसे ही मेरी घरवाली को इस ख़ज़ाने का पता चलेगा, वह सभी जगह यह ख़बर फैला देगी। ज़मींदार को भी इसकी भनक मिल जायेगी और तब यह ख़ज़ाना मुझसे छिन जायेगा, मेरी पूंजी लुट जायेगी।"

उसने सोचा, बहुत सोचा और आख़िर उसे एक तरकीब सूझी। उसने ख़ज़ाने को दबाकर वहां निशान लगाया और घर की ओर चल दिया। नदी-तट पर पहुंचकर उसने अपने जाल पर नज़र डाली। उसमें उसने एक मछली तड़पती देखी। उसने मछली निकाल ली और आगे चल दिया। इसके बाद वह अपने लगाये हुए फंदे के पास पहुंचा। उसमें एक ख़रगोश फंसा था।

किसान ने ख़रगोश को फंदे से बाहर निकालकर उसकी जगह मछली को और ख़रगोश को मछली के जाल में रख दिया।

अंधेरा हो जाने के बाद वह घर लौटा।

"अच्छा तत्याना, चूल्हा जलाकर जल्दी-जल्दी बहुत-सी पूरियां बना दो।"

"किसलिए ? क्या कभी किसी ने रात के समय चूल्हा जलाने की बात सुनी है ? आख़िर किसलिए यह सब झंझट करना चाहते हो ?"

"बहस में मत पड़ो। जो मैंने करने को कहा है, वही करो," किसान ने कहा। आगे धीरे-से बोला, "सुनो, तत्याना, मुझे एक दबा हुआ ख़ज़ाना मिला है और आज रात हमें उसे अपने घर ले आना चाहिए।"

उसकी बीवी बेहद खुश हुई । उसने पलक झपकते में सबकुछ कर डाला, चूल्हा जलाया और पूरियां तलने लगी ।

"स्वामी, इन्हें गर्म-गर्म ही खा लो ।" उसने कहा ।

किसान ने एक पूरी खायी और बीवी की आंख बचाकर दो-तीन अपने थैले में डाल लीं । फिर एक पूरी खायी और दो-तीन थैले में डाल लीं ।

"आज तो तुम खूब पूरियां उड़ाते जा रहे हो ! मैं तो इतनी जल्दी बना भी नहीं सकती ।" उसकी बीवी ने कहा ।

"हमें बहुत दूर जाना है और ख़ज़ाना बहुत भारी है । इसलिए मुझे पेट भरकर खा लेना चाहिए ।"

किसान ने वह थैला पूरियों से ठसाठस भर लिया और बोला, "अच्छा, मैंने तो खूब खा लिया । अब तुम कुछ खा लो तो चलें । हमें जल्दी करनी चाहिए ।"

बीवी ने जल्दी से खाना खाया और दोनों चल पड़े ।

इस समय तक काफ़ी अन्धेरा हो चुका था । किसान अपनी बीवी से आगे-आगे चल रहा था । उसने थैले में से पूरियां निकाल-निकालकर पेड़ों पर लटकानी शुरू कर दीं ।

कुछ देर बाद बीवी ने पूरियां देखीं । बोली, "अरे देखो तो, पेड़ों पर पूरियां लटकी हुई हैं !"

"इसमें हैरानी की क्या बात है ?" उसके पति ने कहा । "क्या तुमने अभी-अभी पूरियों की बरसात नहीं देखी ?"

"नहीं, मेरी आंखें तो नीचे की ओर लगी हुई थीं, ताकि मैं कहीं जड़ों से ठोकर न खा जाऊं ।"

"मैंने यहां ख़रगोशों के लिए फंदा लगाया था।" किसान ने कहा, "चलो, ज़रा उसे भी देख लें।"

वे फंदे के पास गये। किसान ने उसमें से मछली निकाली।

"अरे, इस फंदे में मछली कैसे फंस सकती है?" उसकी बीवी ने पूछा।

"तुम नहीं जानतीं ज़मीन पर चलनेवाली मछलियां भी होती हैं।"

"मैं इस बात पर कभी विश्वास न करती, यदि मैंने इसे अपनी आंखों से न देखा होता।"

वे दोनों इसके बाद नदी–तट पर आये।

"तुमने नदी में जाल भी तो बिछाया है न!" उसकी बीवी ने कहा। "लगे हाथों उसे भी देखते चलें।"

उन्होंने जाल को खींचकर बाहर निकाला, तो उसमें एक खरगोश दिखाई दिया।

"हे भगवान!" उसकी बीवी हाथ पटककर चिल्लायी। "यह कैसा अजीब दिन है! मछली पकड़ने के जाल में ख़रगोश!"

"तुम इस तरह हैरान क्यों हो रही हो? क्या तुमने पहले कभी पानी के ख़रगोश नहीं देखे!" किसान ने कहा।

"सचमुच, मैंने पहले कभी नहीं देखे।"

वे अब उस जगह पहुंच चुके थे, जहां खज़ाना दबा हुआ था। किसान ने खोदकर सोना निकाला और जितना–जितना वे उठा सकते थे, उठाकर घर की ओर चल दिये।

सड़क ज़मींदार के घर के पास से होकर जाती थी। जब वे उसके समीप आये तो उन्होंने भेड़ों का मिमियाना सुना।

"हाय, यह क्या है, मेरी तो डर के मारे जान निकली जा रही है!" बीवी फुसफुसायी।

"जल्दी से भाग चलो, ये शैतान हैं जो हमारे मालिक का गला घोंट रहे हैं। वे हमें न देखें, यही ख़ैर मनाओ!"

वे घर की ओर भाग चले।

किसान ने सोना छिपा दिया और वे दोनों बिस्तर में जा लेटे।

"देखना, तुम इस सोने का किसी से ज़िक्र मत करना, तत्याना। वरना समझ लो कि मुसीबत आ जायेगी।"

"भगवान का नाम लो जी, मेरी जबान से एक शब्द भी नहीं निकलेगा!"

अगली सुबह वे देर से सोकर उठे। बीवी ने चूल्हा जलाया, डोल उठाये और कुंए से पानी लेने चल दी।

कुएं पर पड़ोसिनों ने पूछा, "आज तुमने अपना चूल्हा इतनी देर से क्यों जलाया, तत्याना?"

"बात यह है कि मैं रात–भर घर से बाहर घूमती रही थी, इसीलिए जल्दी नहीं उठ सकी।"

"रात–भर बाहर क्या करती रहीं?" एक स्त्री ने पूछा।

"मेरे पति को एक दबा हुआ ख़ज़ाना मिल गया था। पिछली रात हम उसे लाने गये थे?"

उस दिन गांव भर में यही चर्चा होती रही, "तत्याना और उसके पति को एक दबा हुआ ख़ज़ाना मिला है और वे धन के दो बोरे भरकर घर लाये हैं ।"

उसी शाम को ज़मींदार के पास यह ख़बर पहुंची । उसने किसान को बुला भेजा । पूछा, "तुम्हें मुझसे ख़ज़ाना छिपाने की हिम्मत कैसे हुई ?"

"ख़ज़ाना ! मैंने तो कभी कोई ख़ज़ाना देखा–सुना ही नहीं ।" किसान ने जवाब दिया ।

"सच–सच बताओ !" मालिक चिल्लाया । "मैं सबकुछ जानता हूं । खुद तुम्हारी बीवी ने इसके बारे में सबको बताया है ।"

"ओह, अब समझा, लेकिन उसका तो दिमाग़ ठीक नहीं है । वह तो आपको ऐसी–ऐसी बातें बता सकती है, जिनकी कभी आपने कल्पना भी न की हो ।"

"हम अपने आप इसकी जांच–पड़ताल करेंगे ।"

और मालिक ने तत्याना को बुलवाया । वह आई । मालिक ने सवाल किया, "क्या तुम्हारे पति को ख़ज़ाना मिला है ?"

"जी, मिला है ।"

"तुम दोनों रात के समय इस ख़ज़ाने को लेने गये थे ?"

"जी हां ।"

"मुझे इसके बारे में विस्तार से बताओ ।"

"पहले हम जंगल में से गये, जहां सभी पेड़ों पर पूरियां लटकी हुई थीं ।"

"पूरियां ! जंगल में पूरियां !"

"जी हां ! पूरियों की बरसात हुई थी । फिर हमने ख़रगोश के फंदे को देखा और उसमें एक मछली दिखाई दी । हमने वह मछली निकाल ली और आगे चल दिये । नदी के किनारे पर पहुंचे । ज्योंही जाल बाहर निकाला तो उसमें एक ख़रगोश फंसा हुआ पाया । हमने ख़रगोश बाहर निकाल लिया । नदी के पास ही मेरे पति ने ख़ज़ाने को खोद निकाला । हमने सोने का एक थैला भरा और लौट पड़े । जिस समय शैतान आपका गला दबा रहे थे, उसी समय हम आपके घर के पास से गुज़रे थे ।"

इस पर मालिक अपने गुस्से पर काबू न रख सका । उसने ज़ोर से ज़मीन पर पांव पटका और चिल्लाकर कहा, "जा, री मूर्ख औरत, यहां से निकल जा !"

"हां तो, " उसके पति ने कहा, "अब आपने देख लिया कि यह पागलों की–सी बातें करती है । इसने जिन्दगी भर मुझे किसी–न–किसी मुसीबत में फंसाये रखा है ।"

"अब मुझे य़कीन हो गया है । तू जा !" मालिक ने निराशा से हाथ झटकते हुए कहा ।

किसान घर चला गया । वह आज भी मज़े की ज़िन्दगी बिता रहा है । मालिक को उसने जो चकमा दिया था, उसे याद करके वह मन–ही–मन हंसा करता है । ❑



६/ लड़की और हंस

एक किसान था। उसकी बीवी थी। उनकी एक छोटी–सी लड़की और एक नन्हा लड़का था।

"बेटी!" मां ने लड़की से कहा। "हमलोग काम पर जा रहे हैं, तू अपने छोटे भाई की देखभाल करना। अगर तूने अच्छी लड़की की तरह यह काम किया और घर के बाहर नहीं गयी तो हम तुझे एक नया रूमाल ख़रीद देंगे।"

मां–बाप काम पर चले गये, लेकिन लड़की भूल गयी कि उसकी मां उससे क्या कह गयी थी। उसने अपने नन्हे भाई को खिड़की के पास घास पर बैठा दिया और खुद अपनी सहेलियों के साथ खेलने चली गयी।

यकायक हंसों का एक झुंड उड़ता हुआ आया। हंसों ने ज़मीन पर झपट्टा मारा, नन्हे भैया को उठा लिया और उसे पीठ पर बैठाकर आकाश में उड़ चले।

छोटी–सी लड़की घर लौटी, मगर नन्हा भैया ग़ायब था। वह हक्की–बक्की रह गयी। इधर दौड़ी, उधर दौड़ी, मगर कहीं उसका अता–पता न मिला।

उसने भैया को आवाज़ दी। रोते–रोते उसकी हिचकियां बंध गयीं। उसने पुकारकर कहा कि भैया जल्दी आ जाओ वरना मेरी बड़ी पिटाई होगी, मगर उसके नन्हे भाई ने कोई जवाब नहीं दिया।

तब वह बाहर खुले मैदान में दौड़ गयी; लेकिन वहां भी उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। हां, घने जंगलों से भी बहुत दूर कुछ हंस ज़रूर आसमान में उड़ रहे थे। यकायक उसके मन में यह विचार आया कि हो–न–हो, उसके भैया को ये हंस ही उठा ले गये हैं। उसने लोगों को कहते हुए सुना था कि हंस बहुत बुरे पक्षी होते हैं। वे अक्सर छोटे बच्चों को उठा ले जाते हैं।

लड़की ने आव देखा न ताव और दौड़ पड़ी उन पक्षियों के पीछे। वह दौड़ती गयी, दौड़ती गयी और एक अलावघर के पास जा पहुंची।

"अलावघर, अलावघर, मुझे यह बताओ कि हंस किधर को गये हैं ?"

"पहले मेरी काली रोटी खाओ, तब मैं तुम्हें बताऊंगा।" अलावघर ने कहा।

"क्या कहा, मैं और काली रोटी खाऊं ? अपने बाप के यहां मैं गेहूं की रोटी तक तो खाती नहीं !"

अलावघर ने उसे नहीं बताया । नन्ही लड़की फिर दौड़ने लगी । कुछ दूर आगे उसे जंगली सेबों का एक पेड़ दिखाई दिया ।

"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे यह बताओ कि हंस किधर को गये हैं ?"

" पहले मेरा एक जंगली सेब खा लो, तब मैं बताऊंगा ।"

"मेरे बाप के यहां तो बगीचे के सेब भी नहीं खाये जाते !"

सेब के पेड़ ने उसे नहीं बताया । नन्ही लड़की फिर दौड़ने लगी । कुछ दूर आगे उसे दूध की नदी मिली । उसके किनारे फलों की मिठाई के बने थे ।

"ओ मिठाई के किनारे वाली दूध की नदी, मुझे बताओ कि हंस किधर को गये हैं ?"

"पहले दूध के साथ मेरी थोड़ी मिठाई खाओ, तब मैं बताऊंगी ।"

"मेरे बाप के यहां तो मलाई के साथ भी मिठाई नहीं खाई जाती ।"

दूध की नदी ने भी उसे नहीं बताया ।

नन्ही लड़की दिन-भर जंगलों और मैदानों में दौड़ती रही । शाम हो जाने पर वह बेचारी घर लौटने की सोचने लगी । तभी यकायक उसे क्या दिखाई दिया कि एक छोटी-सी झोंपड़ी है, जिसके मुर्गी जैसे पंजे हैं और एक छोटी-सी खिड़की है । यह झोंपड़ी लट्टू की तरह घूम रही थी ।

झोंपड़ी के अन्दर बाबा-यगा नाम की एक बूढ़ी चुड़ैल बैठी सन कात रही

थी । उसके सामने बेंच पर लड़की का नन्हा भैया बैठा चांदी के सेबों से खेल रहा था ।

छोटी-सी लड़की झोंपड़ी के अन्दर चली गयी ।

"नमस्कार दादी !"

"नमस्कार । तुम यहां किसलिए आयी हो ?"

"मैं कीचड़ और काई में घूमती रही हूं । इसलिए मेरा फ्रॉक भीग गया है । उसे सुखाने आयी हूं ।"

"तो बैठ जाओ और कुछ सन कातो !"

चुड़ैल ने चर्खा लड़की को दे दिया और वह बाहर चली गयी । लड़की वहां बैठी सन कात रही थी कि इतने में यकायक चूल्हे के नीचे से निकल कर एक चूहा दौड़ता हुआ आया और बोला, "लड़की, लड़की, मुझे कुछ दलिया दे तो मैं तुझे एक अच्छी बात बताऊं ।"

नन्ही लड़की ने उसे कुछ दलिया दे दिया । तब चूहा बोला, "चुड़ैल गुसलखाने में आग जलाने गयी है । वह तुम्हें नहला-धुलाकर अलावघर में भूनेगी, फिर खा जायेगी और तुम्हारी हड्डियों पर सवारी करेगी ।"

नन्ही लड़की डर के मारे रोने और थर-थर कांपने लगी । चूहे ने आगे कहा, "जल्दी करो, अपने नन्हे भैया को साथ लेकर भाग जाओ । तुम्हारी जगह मैं सन कातता रहूंगा ।"

वह छोटी-सी लड़की अपने नन्हे भैया को गोद में लेकर भाग गयी । चुड़ैल कभी-कभी खिड़की के पास आती और पूछती, "लड़की, कात रही है न ?"

चूहा उसे जवाब दे देता, "हां, दादी, कात रही हूं ।"

गुसलखा़ने में आग जलाकर चुड़ैल छोटी लड़की को लेने आयी तो उसने देखा कि झोंपड़ी खाली है। चुड़ैल चिल्लायी, "उड़कर जाओ, हंसो उड़कर जाओ और दोनों को पकड़कर लाओ! बहन अपने नन्हे भैया को उठा ले गयी है।"

उधर बहन अपने नन्हे भैया के साथ भागते-भागते दूध की नदी के पास पहुंची। तभी उसने देखा कि हंस उसे और उसके भैया को पकड़ने के लिए उड़ते आ रहे हैं।

"नदी मां, नदी मां, मुझे छिपा लो, जल्दी!" छोटी लड़की चिल्लायी!

"मेरी फलों की मिठाई खानी पड़ेगी।"

लड़की ने थोड़ी मिठाई खा ली और कहा, "धन्यवाद!"

दूध की नदी ने उसे और उसके भैया को फलों की मिठाई के अपने किनारे के बीच छिपा लिया।

हंस इन्हें नहीं देख पाये और वे उड़ते हुए आगे चले गये।

लड़की नन्हे भैया के साथ आगे बढ़ी। लेकिन उधर हंस भी लौट पड़े थे और सीधे उसी की तरफ़ उड़ते आ रहे थे। लगता था कि अभी उनकी निगाह उस पर पड़ जायेगी। अब वह क्या करे? वह दौड़कर सेब के पेड़ के पास पहुंची।

"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे छिपा लो जल्दी!"

"मेरा जंगली सेब खाना पड़ेगा!"

नन्ही लड़की ने जल्दी-जल्दी एक सेब खाकर कहा, "धन्यवाद!"

सेब के पेड़ ने उसे अपने पत्तों और टहनियों के बीच छिपा लिया।

हंसों ने उन्हें नहीं देखा और आगे चले गये।

नन्ही लड़की ने अपने भैया को उठाकर फिर दौड़ना शुरू कर दिया। वह घर के बिल्कुल नज़दीक पहुंच गयी थी कि हंसों की उस पर निगाह पड़ गयी। उन्होंने उसे देखते ही चीख़ना और फड़फड़ाना शुरू कर दिया। एक मिनट और बीतता तो वे झपट्टा मारकर नन्हे भैया को लड़की के हाथों से छीन ले जाते। पर नन्ही लड़की दौड़कर अलावघर के पास पहुंच गयी।

"अलावघर, अलावघर, मुझे छिपा लो, जल्दी!"

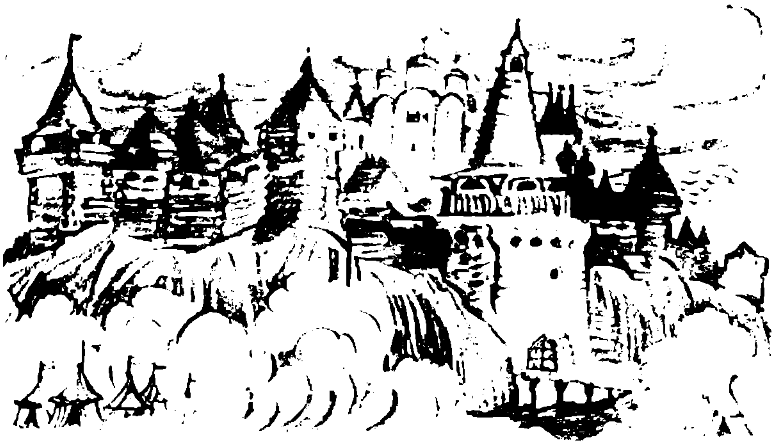
"मेरी काली रोटी खानी पड़ेगी!"

लड़की ने जल्दी से रोटी का एक टुकड़ा तोड़कर मुंह में डाल लिया और अपने भैया को लेकर अलावघर में घुस गयी।

हंस कुछ देर तक चीख़ते-चिल्लाते हुए अलावघर के चारों ओर चक्कर काटते रहे फिर थककर चुड़ैल के पास लौट गये।

छोटी लड़की ने अलावघर को धन्यवाद दिया और अपने भैया को लेकर वह घर दौड़ गयी।

थोड़ी ही देर बाद लड़की के मां-बाप भी घर लौट आये। ❑



१०/ इल्या की बहादुरी

बहुत साल पहले की बात है । मूरोम नामक शहर के पास, कराचारोवो नामक गांव में इवान तिमोफ़ेयेविच नाम का एक किसान रहता था । उसकी बीबी का नाम था येफ़्रोसीन्या याकोव्लेवना और उनके इल्या नाम का इकलौता बेटा था ।

एक दिन यात्रा की पूरी तैयारी करके इल्या अपने मां-बाप के पास गया और बोला, "पिताजी और माताजी, मुझे इजाज़त दीजिये कि देश की राजधानी,

कीयेव, जाकर राजा व्लादीमिर की सेना में भर्त्ती हो जाऊं। मैं अपनी मातृभूमि, रूस की बड़ी सच्चाई और दृढ़ता के साथ सेवा करूंगा और अपने दुश्मनों से रूसी धरती को बचाऊंगा!"

इस पर उसके बूढ़े बाप इवान तिमोफ़ेयेविच ने कहा, "अच्छे कामों के लिए मैं तुझे आशीर्वाद देता हूं, पर बुरे कामों के लिए नहीं। सोने के या लाभ के लालच से नहीं, बल्कि देश में नाम कमाने के लिए और वीर योद्धा कहलाने के लिए अपनी मातृभूमि की रक्षा करना। मनुष्य का रक्त कभी वृथा न बहाना और न कभी माताओं को आंसू बहाने के लिए मजबूर करना। यह कभी मत भूलना कि तुम धरती के बेटे, किसान हो।"

इल्या ने जमीन पर माथा टेककर अपने मां-बाप को प्रणाम किया और अपने कत्थई-झबरे घोड़े पर ज़ीन कसने के लिए चला गया। उसने पहले घोड़े की कमर पर एक ज़ीन-पोश डाला, फिर उसके ऊपर नमदे की पट्टी र और नमदे के ऊपर चोर्कासी ज़ीन कसा, जिसके बारह तंग रेशम के थे और तेरहवां लोहे का था। वह दिखावे के लिए नहीं, बल्कि मज़बूती के लिए था।

अब इल्या के मन में विचार आया कि ज़रा अपने बल की परीक्षा कर ले।

घोड़ा दौड़ाता हुआ वह ओका नदी के पास पहुंचा। उसके किनारे पर एक ऊंची पहाड़ी खड़ी थी। इल्या ने अपना कंधा लगाकर जो धक्का दिया तो पहाड़ी नदी में जा गिरी। उससे ओका नदी का रास्ता रुक गया और उसे मजबूर होकर अपने लिए दूसरा रास्ता बनाना पड़ा।

इल्या ने रई की काली, रोटी का एक टुकड़ा ओका नदी की धार में

डालकर कहा, "नदी–माता, तूने मूरोमवासी इल्या को सदा अन्न–जल दिया है, उसके लिए तुझे बहुत–बहुत धन्यवाद !"

वहां से चलने के पहले उसने अपनी मातृभूमि की थोड़ी–सी मिट्टी उठाकर अपनी जेब में रख ली और फिर घोड़े पर सवार होकर उसे चाबुक लगाया ।

लोगों ने इल्या को घोड़े पर चढ़ते तो देखा, मगर यह कोई न देख सका कि वह किधर गया है । वे बस, इतना ही देख पाये कि मैदान में धूल की आंधी उठी हुई है ।

इल्या का चाबुक खाकर घोड़ा पहले तो अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया और फिर एक ही छलांग में एक मील पार कर गया । जब घोड़े के सुम ज़मीन पर लगे तो पानी का सोता फूट पड़ा । इल्या ने बलूत का एक बड़ा भारी पेड़ काटकर गिरा दिया और उसकी शाखों से सोते के ऊपर एक चौखटा बना दिया और उस चौखटे के ऊपर लिख दिया, "इवान नामक किसान का बेटा रूसी बहादुर इल्या यहां से गुज़रा था ।"

पानी का वह सोता आज भी बलूत की शाखा के चौखटे के बीच से बह रहा है और जब रात को भालू वहां शीतल जल पीने के लिए जाता है तो उसके शरीर में दैत्य–की–सी शक्ति भर जाती है ।

इल्या वहां से कीयेव शहर की ओर चल पड़ा ।

उसने वह सीधी सड़क चुनी, जो चेर्नीगोव नामक शहर के पास से गुज़रती थी । जब वह चेर्नीगोव शहर के पास पहुंचा तो उसे सुनाई दिया कि शहर की चारदीवारी के इर्द–गिर्द शोर मचा हुआ है । बात यह थी कि हज़ारों तातारियों ने शहर को घेर रखा था । उनके घोड़ों की टापों से जो धूल उठ

रही थी और उनके नथुनों से जो भाप निकल रही थी, उसने धरती को मानो एक स्याह पर्दे से ढक दिया था और आसमान में चमकता हुआ सूरज तक भी आंखों से ओझल हो गया था। तातारी फ़ौज की पंक्तियां इतनी घनी थीं कि एक भूरा ख़रगोश भी उनके बीच से नहीं निकल सकता था और न बाज़ उनके ऊपर से उड़कर जा सकता था। शहर के अन्दर से रोने और कराहने की आवाज़ें आ रही थीं और मौत के घण्टे बज रहे थे। शहर के सभी लोग पत्थर के बने एक बड़े गिर्जाघर में इकट्ठे हो गये थे और वहां छाती पीट–पीटकर रो रहे थे, ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे और मरने की तैयारी कर रहे थे। उनकी निराशा का कारण यह था कि चेर्नीगोव को तीन तातारी सरदारों ने घेर रखा था और उनमें से हर एक के पास चालीस–चालीस हज़ार फ़ौज थी।

यह देखकर इल्या के बदन में मानो आग–सी लग गयी। लगाम खींचकर उसने घोड़े को रोका, बलूत के एक हरे पेड़ को जड़ समेत ज़मीन से उखाड़ लिया और उसे चोटी से पकड़कर तातारियों पर टूट पड़ा। वह अपने दुश्मनों को बलूत के पेड़ से मार–मारकर नीचे गिराने और उन्हें अपने घोड़े की टापों के नीचे कुचलने लगा। उसने अपना पेड़ इधर घुमाया कि रास्ता साफ़ हो गया, उधर घुमाया तो वहां भी गली बन गयी। इस तरह तातारियों को मारता–गिराता हुआ इल्या आख़िर उन तीन तातारी सरदारों के पास पहुंच गया। उसने तीनों की लाल ज़ुल्फ़ें पकड़कर उनसे कहा, "सुनो, ओ तातारी सरदारो! बोलो, मैं तुम्हें क़ैदी बनाऊं या तुम्हारे सिर काट डालूं? क़ैदियों के साथ माथा खपाने की मुझे फ़ुर्सत नहीं है। मैं अपने घर पर नहीं बैठा हूं, बल्कि सफ़र पर जा रहा हूं। फिर मेरे थैले में इतनी रोटी भी नहीं है कि मुफ़्तख़ोरों को खिलाऊं। लेकिन यह भी ठीक नहीं है कि रूसी बहादुर

इल्या मूरोमवासी तातारियों के सिर काटकर अपने हाथ गंदे करे । इसलिए, जाओ, अपनी फ़ौज लेकर चले जाओ और हमारे सारे दुश्मनों में यह ख़बर फैला दो कि मेरी मातृभूमि, रूस अभी वीरों से ख़ाली नहीं है । वह बहादुरों की भूमि है और उसके दुश्मन यह बात अच्छी तरह समझ लें ।"

यह कहकर इल्या चेर्नीगोव शहर में दाख़िल हो गया । वह पत्थर के उस बड़े गिर्जाघर के अन्दर गया, जहां शहर के लोग छाती पीट–पीटकर रो रहे थे और मरने के पहले एक–दूसरे से गले मिलकर विदा ले रहे थे ।

"चेर्नीगोव–निवासियो, नमस्कार !" इल्या ने कहा । "यह रोना और गले मिलना किसलिए हो रहा है और अन्तिम नमस्कार क्यों किया जा रहा है ?"

"रोने के सिवा हम और कर ही क्या सकते हैं, जब तीन सरदारों ने चेर्नीगोव को घेर रखा है और उनमें से हरेक चालीस–चालीस हज़ार फ़ौज लेकर आया है ? हमारे सिर पर मौत नाच रही है ।" वे रोते हुए बोले ।

"क़िले की चहारदीवारी पर चढ़कर उस मैदान की तरफ़ देखो, जहां दुश्मन की फ़ौजें जमा थीं ।" इल्या ने कहा ।

शहरवालों ने क़िले की चहारदीवारी पर चढ़कर देखा तो सचमुच मैदान में तातारियों की लाशें इस तरह बिखरी हुई थीं, जैसे ओले पड़ने के बाद खेत में अनाज की बालें बिखरी हों ।

यह देखकर चेर्नीगोव के निवासियों ने झुककर इल्या को नमस्कार किया, रोटी और नमक से उसका स्वागत किया और सोना–चांदी और हीरे–जवाहरात जड़ा कमख़्वाब उसे भेंट में दिया । फिर पूछा, "वीर युवक, रूसी बहादुर, हमें बताओ तुम्हारे सगे–सम्बंधी कौन हैं ? तुम्हारा बाप कौन है और तुम्हारी मां

कौन है ? तुम्हारा नाम क्या है ? तुम यहीं पर, चेर्नीगोव में ही रहो और हमारे सरदार बनना क़बूल करो । हमसब तुम्हारा हुक्म बजायेंगे, तुम्हारा आदर करेंगे । हम तुम्हारे लिए खाने-पीने की कभी कमी नहीं होने देंगे । तुम बड़े ठाट-बाट और सम्मान के साथ रहोगे ।"

इल्या मूरोमवासी ने अपना सिर हिलाकर कहा, "चेर्नीगोव के निवासियो, मैं एक रूसी बहादुर हूं और मूरोम शहर के नज़दीक कराचारोवो नामक गांव के एक मामूली किसान का बेटा हूं । मैंने तुम्हें लाभ के लालच से नहीं आज़ाद किया है । मुझे सोना-चांदी कुछ नहीं चाहिए । मैंने तो रूसी मनुष्यों, सुन्दर कुमारियों, निरीह बच्चों और बुढ़िया माताओं को मुसीबत से छुड़ाया है । मैं तुम्हारा सरदार नहीं बनना चाहता और न धन-दौलत चाहता हूं । मेरी ताक़त ही मेरी दौलत है । मेरा काम है रूस की सेवा करना और उसे दुश्मनों से बचाना ।"

चेर्नीगोव-निवासियों ने इल्या से अनुरोध किया कि वह कम-से-कम एक दिन तो उनके साथ रहे और उनकी दावत का आनन्द ले । लेकिन इल्या इसके लिए भी राज़ी नहीं हुआ । उसने कहा, "भले लोगो, मैं ठहर नहीं सकता । रूस दुश्मनों के हमलों से कराह रहा है और मुझे जल्दी-से-जल्दी राजा व्लादीमिर के पास पहुंच जाना है । मुझे रास्ते के लिए थोड़ी-सी रोटी और प्यास बुझाने के लिए सोते का कुछ पानी दे दो और यह बता दो कि कीयेव जाने की सीधी सड़क कौनसी है ।"

चेर्नीगोव के निवासी बहुत दुखी हुए और सोच में डूब गये । बोले, "हाय इल्या मूरोमवासी, कीयेव जानेवाली सीधी सड़क तो घास से ढंकी हुई है । पिछले तीस साल से कोई भी उस सड़क पर से नहीं गया है ।"

"क्यों, इसकी क्या वजह है ?" इल्या ने उत्सुकता से पूछा ।

उन्होंने जवाब दिया, "उस सड़क पर रहमान के बेटे सीटीबाज़ डाकू का क़ब्ज़ा है । वह वहां स्मोरोदिनाया नदी के किनारे बलूत के तीन पेड़ों की नौ शाखाओं के ऊपर बैठा हुआ है । जब वह चिड़िया की तरह सीटी बजाता है और जंगली जानवर की तरह गरजता है तो सारे पेड़ ज़मीन पर झुक जाते हैं, फूलों की पंखुड़ियां झड़ जाती हैं, घास सूख जाती है और आदमी तथा घोड़े गिरकर ढेर हो जाते हैं । एक दूसरी सड़क भी है, लेकिन बहुत घुमावदार है । तुम इसी सड़क पर जाओ । हां, यह बात सही है कि कीयेव जानेवाली यह सड़क दो सौ मील और दूसरी सड़क साढ़े छः सौ मील लम्बी है ।"

इल्या मूरोमवासी कुछ देर तक चुप रहा और फिर उसने अपना सिर झटककर कहा, "मैं बहादुर हूं । मुझे यह शोभा नहीं देता कि चक्करदार रास्ते से जाऊं और कीयेव की सीधी सड़क सीटीबाज़ डाकू के क़ब्ज़े में छोड़ दूं । मैं इस सीधी सड़क से ही जाऊंगा, जिसपर तीस साल से कोई नहीं गया है ।"

यह कहकर इल्या कूदकर घोड़े पर सवार हो गया । उसने घोड़े को एक चाबुक लगाया और पलक मारते ही आंखों से ओझल हो गया । ❑ ❑

'मण्डल' द्वारा प्रकाशित

देश-देश की लोक कथामाला

'मण्डल' ने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की चुनी हुई लोक-कथाओं की लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस माला को पाठकों ने बड़े चाव से अपनाया है। उसी से प्रेरित होकर हमने इस नई पुस्तक-माला का आरंभ किया है। इसमें पहली पुस्तक **'मारीशस की शकुन्तला'** में मारीशस की लोक-कथाएं दी गई हैं। प्रस्तुत पुस्तक में रूस की बहुत ही सरस और मनोरंजक लोक-कथाएं हैं।

आगे इस माला में बर्मा, चीन, कनाडा, जापान, इंडोनेशिया, थाईलैंड आदि देशों की लोक-कथाएं शीघ्र ही प्रकाशित की जायेंगी।

विश्वास है, पाठक इन सब पुस्तकों को चाव से पढ़ेगे।

सस्ता साहित्य मण्डल

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन